एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

भावार्थ : इस ब्रह्मवर्त भारत देश में उत्पन्न हुए विद्वानों के सानिध्य से पृथ्वी पर रहने वाले सब मनुष्य अपने-अपने आचरण अर्थात् कर्तव्यों की शिक्षा ग्रहण करें।

वर्ष : 15 अंक : 09

मातृवन्दना

आश्विन-कार्तिक, कलियुगाब्द 5117, अक्तूबर, 2015

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

✡

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

भगवान रघुनाथ का कुल्लू आगमन

कुल्लू दशहरा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भगवान रामचन्द्र जी के अयोध्या से कुल्लू आगमन पर आधारित है। इस सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार कुल्लू नरेश जगतसिंह (1637-1662 ई.) के शासनकाल की एक घटना है। इस घटना के अनुसार प्रजा के किसी व्यक्ति द्वारा उकसाने पर नरेश ने एक ब्राह्मण से 1 पत्था (डेढ़ किलो ग्राम) शुद्ध मोतियों को राजकोष में जमा कराने का आदेश दिया। वस्तुतः ब्राह्मण के पास एक भी मोती नहीं था। राजभय से ब्राह्मण ने सपरिवार अग्निदाह कर डाला। ❖

सम्पादकीय	अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव कुल्लू दशहरा	3
प्रेरक प्रसंग	नींव के पत्थर	4
चिंतन	संस्कार और संस्कृति	5
आवरण	कुल्लू का दशहरा	6
संगठनम्	सामाजिक समरसता के प्रति जागरूक हो समाज	10
देवभूमि	चियोग में 'मेरा गांव-मेरा गौरव' की शुरुआत	12
देश-प्रदेश	हिन्दुओं से ज्यादा बढ़े मुसलमान	14
काव्य जगत	भारत भाग्य विधाता	16
पुण्यजयंती	महत्वपूर्ण है वैचारिक उपस्थिति	17
युवा पथ	वोकेशनल शिक्षा भी फायदेमंद	18
महिला जगत	भारतीय नारी के अखंड सुहाग का प्रतीक	19
दृष्टि	3 दोस्तों ने शुरु किया ब्लड डोनर क्लब	20
संस्कृतम्	संस्कृतं वदाम्	21
कृषि	अब तीन साल में फल देगा हरड़ का पौधा	22
विविध	विजयादशमी-विजय का उत्सव	23
घूमती कलम	आतंक के पर्याय के खिलाफ मुस्लिम विद्वानों का फतवा	25
समसामयिकी	हिन्दुत्व की गहरी जड़ें हैं हिन्दुस्तानी वट वृक्ष में	27
पुण्यजयंती	वाल्मीकि रामायण में आश्रम व्यवस्था	29
बाल-जगत	नचिकेता की श्रद्धा	31

पाठकों के पत्र

महोदय,

सितम्बर मास के अंक में आप ने सम्पादकीय में तथा अन्य बुद्धिजीवियों ने जो रचनाएं डॉ. कलाम के विचारों पर प्रस्तुत की हैं वे उनके लिए सच्ची श्रद्धांजलि हैं। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र के लिए जो मार्ग दर्शन किया है वह हमारे शिक्षकों के लिए प्रेरणादायक है। शिक्षा वह साधन है जिस पर व्यक्ति, परिवार, समाज तथा शहर की सौ वर्ष की योजना खड़ी होती है। यदि हमें पुन: विश्वगुरू बनना है तो पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नारों 'जय जवान-जय किसान' तथा 'जय विज्ञान' को प्रायौगिक रूप देना होगा। आज आवश्यकता है कि भारतवर्ष नालन्दा तथा तक्षशिला जैसे विश्वप्रसिद्ध विश्वविद्यालय गुणवत्ता के आधार पर स्थापित करे। परन्तु यह तभी सम्भव है यदि नींव जो कि प्राथमिक शिक्षा है पक्की होगी।❖

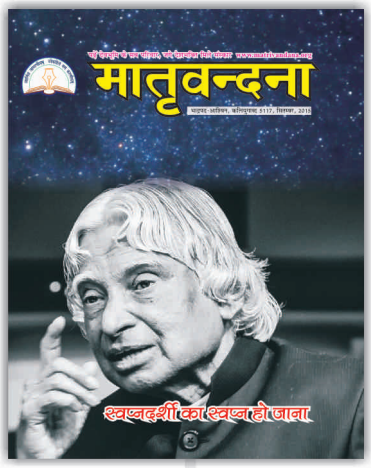

लक्ष्मी चंद, गांव बांध भावगड़ी कसौली

धरातल पर स्वच्छ भारत की स्थिति

संपादक महोदय,

गत वर्ष गांधी जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की गई। अभियान का मुख्य उद्देश्य भारत वर्ष को 2020 तक संपूर्ण स्वच्छता की ओर ले जाना है। इस अभियान को लगभग 11 महीने पूरे हो चुके हैं। शुरूआत में लोगों में इस अभियान को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला मगर चंद दिनों में ही यह अभियान कुंद पड़ गया लगता है। प्रधानमंत्री ने फिल्मी सितारों के साथ-साथ राजनेताओं को भी इस अभियान का प्रमुख हिस्सा बनाया एवं स्वयं भी हाथ में झाड़ू ले सफाई करते दिखे, लेकिन चंद महीनो में ही सफाई अभियान लगभग धूमिल सा हो गया। जगह-जगह गंदगी के ढ़ेर देखने को मिलते हैं। साथ ही लोगों का उदासीन रवैया दिल तोड़ने वाला लगता है। राजधानी शिमला की बात करें तो यहां भी कई स्थानो पर गंदगी दिखाई देती है। शहर की खुबसूरती एक बदनुमा सा दाग लगती है। गंदगी शहर के प्रमुख मार्केट में एवं प्रमुख प्रसिद्ध स्थलों के आसपास दिखाई देती है। शहर वासियों के साथ-साथ पर्यटकों के मन में भी शहर की नाकारात्मक छवि बन रही है। सरकार एवं प्रशासन तो सफाई व्यवस्था बनाने में प्रयासरत हैं मगर, हमारी खुद की गतिविधियां खुद इस पर पानी फेर देती हैं। मसलन रिज मैदान पर आईसक्रीम, स्नैक्स के रैपर व कोल्ड ड्रिंक की बोतलें फैंकना। हमें स्वयं से शुरूआत करते हुए दूसरों को भी सफाई के प्रति जागरूक कर प्रेरित करना है। हम सभी अपना-अपना योगदान देंगे तो निश्चय ही स्वच्छ भारत का सपना साकार हो सकेगा। ❖

रमन कांत, छात्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार,
एपी गोयल वि0 वि0 शिमला।

स्मरणीय दिवस (अक्तूबर)

महात्मा गांधी /श्री लालबहादुर शास्त्री जयन्ती	2 अक्तूबर
एकादशी	8 व 24 अक्तूबर
अमावस्या	12 अक्तूबर
नवरात्र प्रारंभ	13 अक्तूबर
महाअष्टमी	21 अक्तूबर
दशहरा उत्सव	22 अक्तूबर
मुहर्रम	24 अक्तूबर
महर्षि वाल्मीकि जयंती (शरद पूर्णिमा)	27 अक्तूबर
करवा चौथ व्रतोत्सव	30 अक्तूबर
सरदार पटेल जयंती	31 अक्तूबर

अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव कुल्लू दशहरा

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहा जाता है। यह नाम इसलिए लोक प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ के हर गांव का अपना एक देवता है, जिसकी स्थानीय लोग पारम्परिक रूप से पूजा करते हैं। पर्वतों के हर शिखर पर शिव या शक्ति का अधिष्ठान है। यत्र तत्र वृहदाकार वन्य वृक्षों में काली दुर्गा का वास है। हिमालय के इस आंचल में आदिकाल से ही ऋषि-मुनि एकांतवास में कठोर तपस्या में लीन रहे हैं। ये ऋषि-मुनि भी यहां के अराध्य देवता बने हैं। इसलिए प्रदेश की संस्कृति प्रारम्भिक काल से ही देवप्रधान रही है। यह प्रदेश अपने समृद्ध सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा लोकगाथा प्रसिद्ध विश्व धरोहरों के लिए जाना जाता है यद्यपि यहां के अधिकांश देवी देवताओं की शिव स्वरूप में पूजा की जाती है और देवियों की शक्ति माता स्वरूप में। तथापि विष्णु, राम-कृष्ण रूप में भी अनेक देवता पूजित हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम (रघुनाथ) की देवस्वरूप मूर्ति, मन्दिर एवं उससे जुड़े त्यौहार का प्रत्यक्ष-रूपेण दर्शन हमें हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला में उपलब्ध होता है। वैदिक एवं पौराणिक गाथाओं के अनुसार इस जनपद के मनाली स्थान पर ही मनु ने सृष्टि का नवसृजन किया था। इतिहास में कुलूत नाम से प्रसिद्ध यह प्राचीन राज्य अनेक ऋषि - मुनियों की तपोस्थली रहा है। प्राचीन काल से ही स्वतंत्र एवं शक्तिशली राज्य के रूप में प्रसिद्ध 17 वीं शताब्दी में यहां के राजा जगतसिंह के साथ घटी दुर्घटना के कारण (जिसका उल्लेख आवरण कथा मे किया गया है) राम और सीता की मूर्ति को अयोध्या से कुल्लू राजा के राजमहल में लाया गया। यहां भगवान रघुनाथ का मन्दिर बनाया गया। सन् 1653. ई0 में अयोध्या से भगवान रघुनाथ को लाया गया था, ऐसी जनश्रुति है और सन् 1660 ई0 के पूर्व कुल्लू दशहरे की परम्परा आरंभ हुई मानी जाती है । सम्पूर्ण भारत में दशहरे के समापन पर कुल्लू में दशहरे का शुभारंभ होता है। यह दशहरा देव समागम का अनूठा पर्व है। पूर्व में 365, देवी देवता इसमें भाग लेते थे, आज भी पर्याप्त संख्या में जनपद के विभिन्न क्षेत्रों के देवता यहां पधार कर भगवान रघुनाथ का दर्शन कर परंपरा का निर्वहन कर रहे हैं। देवी हिडिम्बा (मनाली) जो राजकुल की देवी है, उसके आगमन से कुल्लू दशहरे का शुभारम्भ होता है। इस उत्सव में हिडिम्बा माता के साथ-साथ बिजली महादेव की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस दशहरा उत्सव में कुल्लू घाटी के सैकड़ों देवी-देवताओं के अनूठे संगम दृश्य को देखने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं तथा देश-विदेश के पर्यटकों की भीड़ उमड़ पड़ती है।

इस उत्सव में राजवंश के प्रतिनिधि द्वारा शस्त्र और अश्व पूजन किया जाता है। भगवान राम की मूर्ति को पालकी में सजाया जाता है । सबसे आगे नारसिंह का घोड़ा, फिर विभिन्न प्रकार के वाद्य-यंत्रो को बजाने वाली टोली, उसके पश्चात् भगवान रघुनाथ की पालकी, फिर राजा की पालकी जिसमें राजगुरू की खड़ाऊँ और मृगछाला होती है, पीछे आमंत्रित सभी देवी देवताओं की पालकियाँ और अंत में पारम्परिक वेशभूषा में जनसमूह का उमड़ना अत्यंत अनुपम दृश्य की छटा बिखेरता है। शोभायात्रा के ढालपुर पहुँचने पर बारह पहियों के रथ में मूर्ति का आरोहण किया जाता है तदोपरांत दो बड़े रस्सों से खींचकर शिविर तक ले जाया जाता है। छः दिन तक सभी के दर्शन हेतु भगवान रघुनाथ वहीं विराजमान रहते हैं। इस उत्सव के विविध आकर्षण हैं। यहां की अलौकिक लोक संस्कृति के इसमें दर्शन होते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन इस दौरान किया जाता है। विशेष रूप से लिम्का बुक में दर्ज सामूहिक लोक नृत्य गिनिज बुक में शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर ही नहीं अपितु, आर्थिक व व्यावसायिक दृष्टि से भी इस उत्सव का विशेष महत्व है। जिसका विशेष वर्णन आवरण कथा में किया गया है।

नींव के पत्थर

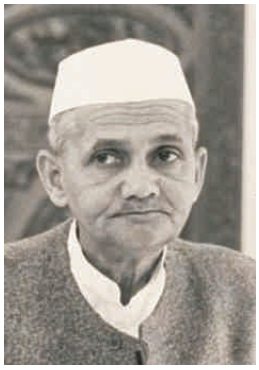

लाल बहादुर शास्त्री जब लोक सेवा मंडल के अध्यक्ष बने, तब वे बहुत अधिक संकोची हो गये। वे नहीं चाहते थे कि उनका नाम समाचार-पत्रों में छपे और लोग उनकी प्रशंसा और स्वागत करें।

एक दिन शास्त्री जी के पास कुछ मित्रों ने उनसे पूछा-'शास्त्री जी, आपको समाचार-पत्रों में नाम छपवाने से इतना परहेज क्यों है?'

शास्त्री जी कुछ देर सोचकर बोले- ''लाला लाजपत राय ने लोक सेवा मंडल के कार्य की दीक्षा देते हुए कहा था -'लाल बहादुर, ताजमहल में दो प्रकार के पत्थर लगे हैं। एक बढ़िया संगमरमर के पत्थर हैं, जिनको सारी दुनिया देखती है और उनकी प्रशंसा करती है। दूसरे वे पत्थर हैं जो ताजमहल की नींव हैं, जिनके जीवन में केवल अंधेरा ही अंधेरा है। किन्तु ताजमहल को उन्होंने ही खड़ा रखा है।' लाला जी के वे शब्द मुझे हर समय याद रहते हैं। मैं नींव का पत्थर ही बना रहना चाहता हूँ।''❖

सुख की नींद

किसी नगर में एक सेठ रहता था। उसके पास अपार संपत्ति, लंबी-चौड़ी हवेली व नौकर-चाकरों की सेना थी। सभी तरह के सुख थे। किंतु दु:ख यह था कि उसे रात भर नींद नहीं आती थी। उसने हर जगह इलाज कराया, किंतु सफलता नहीं मिली। एक दिन नगर में ऐसे साधु आए, जो लोगों के दु:ख दूर करते थे। पता लगने पर सेठ भी वहां गया और साधु को अपनी परेशानी बताई। साधु ने कहा, 'वत्स तुम्हारे रोग का कारण तुम्हारा अपंग होना है।' सुनकर सेठ हैरानी से बोला, 'महाराज, मैं अपंग कहां हूं? यह देखिए मेरे अच्छे खासे हाथ पैर हैं।' साधु विनम्रता से बोले, 'अरे भाई, वास्तविक अपंग तो वही होता है जो हाथ पैर सही सलामत होने पर भी उनका इस्तेमाल नहीं करता। तुम खुद ही बताओ की दिन भर अपने शरीर से कितना काम लेते हो?' सुनकर सेठ चुप हो गया, क्योंकि वह तो छोटे-छोटे काम के लिए भी नौकरों पर निर्भर रहता था। सेठ को चुप देखकर साधु बोले, 'अगर रोग से बचना है, शरीर के दु:खदर्द दूर करने हैं, तो इतनी मेहनत करो कि थक कर चूर हो जाओ। बीमारी अपने आप दूर हो जाएगी।' सेठ ने ऐसा ही किया। अगले दिन परिवार वाले सेठ को गहरी व चिंतामुक्त निद्रा में सोया देखकर हैरान रह गए। ❖

त्याग का फल

अंग्रेजी शासनकाल में सरकारी चुँगी विभाग में पद्मलोचन नाम के एक सज्जन काम करते थे। अंग्रेज अधिकारी उनके काम से बहुत प्रसन्न थे। एक अंग्रेजी अधिकारी ने उनके कार्यों से संतुष्ट होकर उनके वेतन में पचास रूपए वृद्धि करने की इच्छा प्रकट की। इस पर पद्मलोचन ने उस अधिकारी से कहा, 'मुझे जो वेतन मिलता है, उससे मेरा निर्वाह अच्छी तरह से हो जाता है। आप मेरा वेतन न बढ़ाकर मेरे अधीनस्थ कर्मचारियों का वेतन बढ़ा दीजिए।' अधिकारी महोदय उनका यह त्याग देखकर बेहद आश्चर्यचकित हुए और उनकी सलाह से उनके मातहत कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि कर दी। भारत में आधुनिक सभ्यता के विकास के पहले यहां के ज्यादातर लोग ऐसा सादा जीवन व्यतीत करना ही पसंद करते थे और दूसरों के हितों की ज्यादा चिंता रखते थे। ❖

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

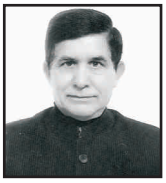

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सैंटर
गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

संस्कार और संस्कृति

संस्कार आत्मबल के परिचायक हैं। ये भौतिक सुखों से ऊपर उठकर विश्वास और आस्था द्वारा किसी अलौकिक व अवर्णनीय आनंद की सुखद अनुभूति कराते हैं। आस्था संस्कार की अमर बेल है। वैज्ञानिक की भांति जिस मस्तिष्क में मानव अच्छे-बुरे की पहचान करता है, वहीं से संस्कार की खोज उसे श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा देती है। परमार्थ और मोक्ष संस्कार से जुड़े हैं। संस्कार से संस्कृति बनी है। संस्कृति जीवन-दर्शन है। मानवीय मूल्यों से उपजे संस्कार मनुष्य को आदर्श चरित्रवान बनाते हैं, जो विश्वव्यापी महापुरूष बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। इसीलिए भारत आध्यात्मिक चेतना की कर्मभूमि है।

जीवन-मूल्य शाश्वत, श्रेष्ठ और कल्याणकारी होने के कारण हमें व दूसरों को आनंद देते हैं। संस्कृति का उद्‌भव सृष्टि के साथ हुआ है। श्रेष्ठता ही संस्कृति है। श्रेष्ठ जीवन-दर्शन और नैतिक मूल्य इसकी आधारशिला है। मूल्य वे आदर्श और लक्ष्य हैं जिन्हें मानदंड और विश्वास मानकर अधिकांश समाजों ने अपनाया है। मूल्यों की जड़ें व्यक्ति के अंतर्मन से निहित होती हैं। संस्कृति की अपनी मौलिकता उसे विलक्षण बनाती है। संपूर्ण विश्व की संस्कृति दिव्य-दर्शन है। यह बौद्धिक सृजन ही नहीं, बल्कि मनुष्य की अनंत जिजीविषा की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। इसलिए यह श्रेष्ठतम मानव जीवन की निरंतर प्रवाहमान प्राणवायु है। संस्कृति जीवन-रस है। मानव मात्र प्राणी और जीव है और उसकी आत्मा संस्कृति है। जीवात्मा का उत्कर्ष और परमानंद ही संस्कृति है। संस्कृति का मूलाधार सार्वभौमिक और शाश्वत आत्मा है। मानवता की सेवा संस्कृति का मूल दर्शन है। सामाजिक जीवन का अर्थ है संबंधों का जीवन। मूल्य केवल परिवार में विकसित होते हैं, जिनके जीने का एक तरीका है।

जीवन में संचित किए गए संस्कार संस्कृति के अंग बन जाते हैं। किसी देश की पहचान सत्ता से नहीं, बल्कि संस्कृति से होती है। संस्कृति को शब्दों में बांधना कठिन है। संस्कृति विश्व का पुष्प नहीं, बल्कि वृक्ष है। ऐसा सुंदर कल्पवृक्ष है, जिस पर पत्ते भी हैं, फल भी हैं और फूल भी हैं। ❖

मनुष्य की कुछ भयंकर भूलें

* इस भाव से मंद कर्मों को करना कि प्रभु प्रार्थना करने से क्षमा कर देंगे।
* अपनी आमदनी से खर्चा अधिक करना यह सोचकर कि भगवान स्वयं सहायता करेंगे।
* अपना भेद किसी पर प्रकट करके उसे गुप्त रखने के लिए कहना और उससे गुप्त रखने की आशा करना।
* अपनी माता-पिता की स्वयं सेवा ना करके अपनी संतान से सेवा की उम्मीद करना।
* इस भाव से दुष्कर्म करना कि दो चार बार करके छोड़ दूंगा।
* जो कार्य अपने से न हो सके वह दूसरों के लिए भी असंभव समझना। ❖

राज कुमार जैन, कुल्लू

प्रश्नोतरी उत्तर:

1. मुकेश अंबानी, 2. एकाग्रता, 3. 17 वां, 4. नाहन नगर पालिका, 5. एपीजे अब्दुल कलाम रोड, 6. हिदेकिची मियाजाकी, 7. 17 वॉं, 8. श्रीपाद यशो नाइक, 9. भारतीय मजदूर संघ, 10. बिहार

पहेलियां उत्तर:

1.पेंसिल 2. आंखें 3. चश्मा 4. तवा-रोटी 5. पसीना 6. दिया-बाती 7. जूते 8. नदी

कुल्लू का दशहरा
विदा दशमी

डॉ. विद्याचन्द ठाकुर, नरेन्द्र शर्मा

हिमाचल प्रदेश के मेलों की समृद्ध परम्परा में कुल्लू के दशहरा मेले का अग्रगण्य स्थान है। स्थानीय लोक भाषा में विदा दशमी के नाम से प्रसिद्ध यह मेला आज प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय सीमाओं को लांघ कर अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मेला बन गया है। इस मेले के प्रति जनमानस का गहरा जुड़ाव शताब्दियों से निरंतर बना हुआ है। अपनी लम्बी यात्रा के बीच मेले में कई उतार-चढ़ाव भी आए परन्तु जन-आस्था की अटूट शक्ति के बल पर यह मेला आज अपने नवीन स्वरूप में भी अतीत की सांस्कृतिक सम्पन्नता से परिपूर्ण है।

भगवान रघुनाथ का कुल्लू आगमन

कुल्लू दशहरा की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि श्री रघुनाथ रामचन्द्र जी के अयोध्या से कुल्लू आगमन पर आधारित है। इस सम्बन्ध में प्रचलित जनश्रुति के अनुसार कुल्लू नरेश जगतसिंह (1637-1662 ई.) के शासनकाल की एक घटना है। इस घटना के अनुसार प्रजा के किसी व्यक्ति द्वारा उकसाने पर नरेश ने एक ब्राह्मण से 1 पत्था (डेढ़ किलो ग्राम) शुद्ध मोतियों को राजकोष में जमा कराने का आदेश दिया। वस्तुत: ब्राह्मण के पास एक भी मोती नहीं था। राजभय से ब्राह्मण ने सपरिवार अग्निदाह कर डाला।

राजमहल में निर्दोष ब्राह्मण की हत्या के अपराध-बोध से राजा की बेचैनी का पारावार नहीं रहा। पानी पीने की चाह हुई तो पानी खून सा दिखने लगा। भोजन के लिए बैठा तो भोजन में कीड़े नजर आने लगे। राजा की कनिष्ठिका उंगली में कुष्ठ रोग के लक्षण उभर आए। बड़ा गम्भीर संकट उपस्थित हो गया। उन दिनों नग्गर के समीप झीड़ों में बाबा कृष्णदास पौहारी रहते थे। पौहारी बाबा आहार में प्राय: दूध ही ग्रहण करते थे, इसीलिए इन्हें पयहारी कहा जाने लगा। यही पयहारी शब्द ध्वनि-परिवर्तन से पौहारी बना। यह बाबा अलौकिक सिद्धि सम्पन्न वैष्णव सन्त थे। राजा ने अपने राजगुरू तारानाथ द्वारा बताए उपायों से कोई लाभ न होने पर इनसे अपनी कष्ट निवारण के लिए प्रार्थना की। पौहारी बाबा ने राजा की मानसिक अस्वस्थता अपनी सिद्धि के बल पर दूर कर दी और शारीरिक कुष्ठ रोग के निवारण एवं ब्रह्म हत्या से मुक्ति के लिए उपाय बताया कि अयोध्या के त्रेतानाथ मंदिर में भगवान् राम द्वारा अपने जीवनकाल में स्वयं बनवायी गई राम और सीता की मूर्तियां हैं। यदि राजा उन मूर्तियों को अपनी राजधानी में लाकर सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित करें तथा राजपाठ भगवान रघुनाथ को समर्पित कर स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में राजपाठ का संचालन करें तो न केवल राजा की आधि-व्याधि दूर होगी अपितु, इससे सम्पूर्ण राज्य में सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित होगा। राजा ने आदरपूर्वक बाबा की सलाह मानते हुए निवेदन किया कि ये मूर्तियां अयोध्या से यहां कैसे लाई जा सकती हैं? तब बाबा ने सुकेत राज्य से अपने शिष्य दामोदर दास को बुला कर राजा की समस्या का समाधान किया। दामोदर दास गुटका सिद्धि का ज्ञाता था। इस सिद्धि से

राजा ने अपने राजगुरू तारानाथ द्वारा बताए उपायों से कोई लाभ न होने पर इनसे अपनी कष्ट निवारण के लिए प्रार्थना की। पौहारी बाबा ने राजा की मानसिक अस्वस्थता अपनी सिद्धि के बल पर दूर कर दी और शारीरिक कुष्ठ रोग के निवारण एवं ब्रह्म हत्या से मुक्ति के लिए उपाय बताया कि अयोध्या के त्रेतानाथ मंदिर में भगवान् राम द्वारा अपने जीवनकाल में स्वयं बनवायी गई राम और सीता की मूर्तियां हैं। यदि राजा उन मूर्तियों को अपनी राजधानी में लाकर सम्मानपूर्वक प्रतिष्ठित करें तथा राजपाठ रघुनाथ को समर्पित कर स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में राजपाठ का संचालन करें तो न केवल राजा की आधि-व्याधि दूर होगी अपितु, इससे सम्पूर्ण राज्य में सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित होगा।

मनुष्य तत्काल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच सकता है।

दामोदर दास गुटका सिद्धि के चमत्कार से अयोध्या पहुंच गया। वहां पुजारियों से घुलमिल कर लगभग छह मास तक त्रेतानाथ मंदिर में सेवा कार्य करता रहा। एक दिन अवसर पाकर उसने राम-सीता की मूर्ति उठायी और गुटका सिद्धि का प्रयोग कर हरिद्वार आ पहुंचा। दामोदर दास मूर्तियां लेकर मकड़ाहर पहुंचा। वहां राजा जगतसिंह ने भगवान रघुनाथ का भरपूर आदर-सत्कार करके राजमहल में विधि-विधान से इनकी स्थापना की और राजपाठ इन्हें सौंप कर स्वयं प्रतिनिधि सेवक के रूप में कार्य करने लगे। राजा पूर्णतया रोगमुक्त हो गया ओर उसके राज्य में भी सुख-समृद्धि का विस्तार हुआ। जब राजा जगतसिंह 'लग' राज्य के साथ लड़ाई में उलझा, उस समय मकड़ाहर, जिसके पास व्यास नदी के दायीं ओर लग राज्य का हाट-बजौरा क्षेत्र था, कुछ असुरक्षित हो गया। अत: इस काल में रघुनाथ जी को मकड़ाहर से ले जाकर मणिकर्ण के रामचन्द्र मंदिर में स्थापना की गई। लड़ाई में 'लग' राज्य का अस्तित्व समाप्त कर उसे अपने राज्य में मिलाया तो राजा जगतसिंह ने नग्गर की राजधानी स्थायी रूप से सुलतानपुर स्थानान्तरित की। यहां राजधानी बनाने के बाद वह भगवान रघुनाथ को मणिकर्ण से सुल्तानपुर ले आए। वहां महल के समीप ही भगवान रघुनाथ का भव्य मंदिर बनाया रघुनाथ का प्राचीन मंदिर 1905 के भूकम्प में क्षतिग्रस्त हो गया था। वर्तमान मंदिर उसके बाद का बना है।

पूरे राज्य की भागीदारी में दशहरा मेले को ढालपुर मैदान में वृहद् स्तर पर मनाने की कार्य योजना बनी। जिसमें राज्य के सभी देवी-देवताओं को सम्मिलित करने का निर्णय हुआ। लोक मान्यता है कि कुल्लू में अधिकांश देवी-देवताओं के कंधे पर उठाये जाने वाले रथ इसी काल में बनाये गए। देवी-देवताओं के ये मनोरम रथ अपने अनेक भव्य रूप-स्वरूपों में दशहरा मेले को विशेष रमणीय छवि प्रदान करते हैं। ऐसी मान्यता है कि किसी समय कुल्लू दशहरा में 360 देवी-देवता पधारते थे। यह संख्या अब बहुत कम हो गई है, फिर भी इतनी संख्या में देवी-देवता आते ही हैं कि इस मेले में देवताओं के सम्मेलन पर्व का प्राचीन स्वरूप आज भी स्पष्ट प्रतिबिम्बित होता है।

स्वयं अधिष्ठित मूर्तियां

रघुनाथ मंदिर कुल्लू में राम, सीता, हनुमान की मूर्तियों तथा नृसिंह की प्रस्तर पिण्डी की पूजा होती है। नृसिंह की पिण्डी राजा जगतसिंह को बाबा पौहारी ने पूजा के लिए दी थी। राम, सीता और हनुमान की मूर्तियां त्रेतानाथ मंदिर अयोध्या से लाई बतायी जाती हैं। इनमें हनुमान की मूर्ति तो राम के परम भक्त के नाते बाद में बनी परन्तु राम और सीता की मूर्तियां भगवान् राम ने अपने जीवन काल में स्वयं बनवायी थीं। इस सम्बंध में कहते हैं कि अश्वमेध के समय यजमान राजा राम के साथ सहधर्मिणी का होना अनिवार्य माना गया तो श्री राम ने सहधर्मिणी की भूमिका के लिए सीता माता की मूर्ति बनवायी और उसी के साथ अश्वमेध का विधि-विधान सम्पन्न किया। रघुनाथ राम द्वारा विशिष्ट उद्देश्य से स्वयं अधिष्ठित इन मूर्तियों के प्रति लोगों की आस्थाओं का अन्तर्मन में प्रगाढ़ प्रभाव अंकित है। भगवान् राम और सीता माता की इन मूर्तियों का आकार अंगुष्ठ मात्र है। लोक विश्वास है कि आत्मा के भावात्मक आकार एवं नित्य प्रकाश को ध्यान में रखते हुए निर्मित ये मूर्तियां अनन्त दिव्य गुण सम्पन्न हैं।

अयोध्या के पुजारी

कुल्लू में एक दिन राजा जगतसिंह को लगा कि राम-सीता की मूर्तियों का गला सूख रहा है। बाबा पौहारी से इसका कारण जानना चाहा तो उन्होंने बताया कि अयोध्या के पुजारी जोधावर को पूजा के लिए यहां बुलाएं क्योंकि हरिद्वार से जब उसे निराश लौटना पड़ा था, तब वह प्रभु चरणों में भक्ति-अनुराग के कारण कह गया था कि भगवान्! तुम हमारे बिना कुल्लू में रह नहीं सकोगे। भगवान् सदैव भक्तों के वश में होते हैं। राजा ने जोधावर को सपरिवार कुल्लू बुलाया और उसे भुंतर में जागीर देकर पूजा का कार्य सौंपा। आज भी जोधावर के वंशज ही भगवान रघुनाथ के पुजारी हैं।

दशहरा का आरम्भ

कुल्लू में वैष्णव सम्प्रदाय के प्रसार के साथ ही मणिकर्ण और वशिष्ठ के रामचन्द्र मंदिर तथा हरिपुर के राजमाधव एवं नग्गर के समीप ठाऊआं के मुरलीधर मंदिर में दशहरा मनाने की परम्परा प्रचलित हुई परन्तु कुल्लू का प्रधान

दशहरा भगवान् रघुनाथ के लतानपुर में प्रतिष्ठित होने के बाद आरम्भ हुआ। पूरे राज्य की भागीदारी में दशहरा मेले को ढालपुर मैदान में वृहद् स्तर पर मनाने की कार्य योजना बनी। जिसमें राज्य के सभी देवी-देवताओं को सम्मिलित करने का निर्णय हुआ। लोक मान्यता है कि कुल्लू में अधिकांश देवी-देवताओं के कंधे पर उठाये जाने वाले रथ इसी काल में बनाये गए। देवी-देवताओं के ये मनोरम रथ अपने अनेक भव्य रूप-स्वरूपों में दशहरा मेले को विशेष रमणीय छवि प्रदान करते हैं। ऐसी मान्यता है कि किसी समय कुल्लू दशहरा में 360 देवी-देवता पधारते थे। यह संख्या अब बहुत कम हो गई है, फिर भी इतनी संख्या में देवी-देवता आते ही हैं कि इस मेले में देवताओं के सम्मेलन पर्व का प्राचीन स्वरूप आज भी स्पष्ट प्रतिबिम्बित होता है।

विदा दसमी नाम की सार्थकता

यह मानना उचित है कि कुल्लू दशहरा की परम्परा प्राचीन शास्त्रीय सिद्धान्तों के अनुसार निश्चित हुई है। प्राचीन भारतीय ग्रन्थों में राजा लोगों के लिए विधान निर्दिष्ट किया गया है कि वे विजयादशमी के दिन अस्त्र-शस्त्र की पूजा करके शत्रु राजाओं पर आक्रमण हेतु विजय कामना से प्रस्थान करें। भगवान् राम ने नवरात्रों में शक्ति माता की आराधना करके विजयादशमी को रावण पर विजय पाने के लिए युद्धभूमि की ओर प्रस्थान किया था। विदा दशमी का प्रथम दिन राम-रावण युद्ध का समारम्भ है। कुल्लू दशहरा के सात दिन की प्रक्रिया के अवलोकन से भी विदा दशमी का यही संदर्भ सार्थक प्रतीत होता है।

ठारा करडू रा मेला

विदा दसमी को 'ठारा करडू रा मेला' (अठारह करडू का मेला) भी कहते हैं। यह नाम इस मेले को देव सम्मेलन की विशिष्ट परम्परा के परिणामस्वरूप प्राप्त है। ठारा करडू कुल्लू के अठारह मूल देवता माने जाते हैं जिनके प्रतीक बांस के बने टोकरीनुमा कण्डू, कौण्डी या करडू होते थे।

ठारा करडू री सौह

ठारा करडू के मेला स्थल के कारण ढालपुर मैदान को ठारा करडू री सौह (अठारह करडू का देवप्रांगण) भी कहते हैं। सौह शब्द का प्रयोग कुल्लुवी में देवता से सम्बन्धित उस खुले स्थल के लिए होता है जहां देवताओं के मेले आदि कार्य अनुष्ठान आयोजित होते हैं।

पहला दिन: ठाकर निकालना

कुल्लू दशहरा का पहला दिन ठाकर निकालना कहलाता है। ठाकर शब्द रघुनाथ के लिए प्रयुक्त होता है जिसका कुल्लुवी रूप ठाकर है। ठाकर निकालने से तात्पर्य है, रघुनाथ का अपने मंदिर से निकल कर मेला मैदान में आना। इस दिन की प्रक्रिया तब तक आरम्भ नहीं की जाती जब तक देवी हिडम्बा (हिडिम्बा) रघुनाथ मंदिर में नहीं पहुंचती। देवी हिडिम्बा को कुल्लू राजा की दादी कहा जाता है। सम्भवत: इसीलिए इन्हीं की उपस्थिति में ही दशहरा की कार्यवाही का समारम्भ होता है। आश्विन शुक्लपक्ष दशमी के दिन प्रात: देवी हिडिम्बा का रथ रामशिला पहुंचता है तो एक व्यक्ति राजा की ओर से छड़ी लेकर वहां जाता है। वहां से देवी को पूर्ण आदर-सत्कार के साथ रघुनाथ मंदिर में लाया जाता है। रघुनाथ मंदिर में शीश नवा कर इन्हें राजमहल में ठहराते हैं। तब दशहरा की आगे की कार्यवाही शुरू होती है। सबसे पहले रघुनाथ मंदिर में बीजपूजा की जाती है। इस पूजा में कुंगु, चंदन, गोरोचन, कस्तूरी, लौंग, इलायची, केसर और पारा मिश्रित अष्टगंध से अस्त्र-शस्त्र एवं रघुनाथ के चिह्न-निशानों पर राम नाम का टीका लगा कर पूजन करते हैं और इसके साथ ही नोपत (दुन्दुभी) तथा अश्व की पूजा होती है। अश्व पूजा को घोड़ पूजन कहते हैं। घोड़ पूजन में नृसिंह भगवान् की वस्त्र-आभूषणों से सुसज्जित घोड़ी का पूजन किया जाता है। रघुनाथ मंदिर में पूजा के बाद राजा राजमहल जा कर महल में स्थित रघुनाथ जी के स्थल के पास भी अस्त्र-शस्त्र, नोपत तथा घोड़ पूजन करता है। तत्पश्चात् ठारा करडू की परौल (ड्योढी) के पास देवी हिडिम्बा राजा को शुभाशीष देती है। यह सब कार्य-विधि होने पर तीन-चार बजे के बीच राजा को शोभायात्रा प्रारम्भ करने के लिए मंदिर में बुलावा जाता है। बुलावे पर राजा मंदिर में पहुंचता है और तब पूरी धूमधाम के साथ रघुनाथ की शोभा यात्रा दशहरा मेला मैदान की ओर प्रस्थान करती है। शोभा यात्रा में सबसे आगे वस्त्र-आभूषणों से सजी-धजी नृसिंह भगवान् की घोड़ी,उसके पीछे ढोल, नगाड़ा, करनाल, रणसिंघा, शहनाई, नोपत आदि बजाते वादक, पताकाएं, सूरजपंखे, छड़ियां आदि विविध चिह्न-निशान, अनेक देवी-देवताओं के रथ और अपार जन-समूह के बीच रघुनाथ जी माता सीता के साथ पालकी में विराजमान होते हैं। रघुनाथ की शोभा यात्रा जब ढालपुर मैदान में पहुंचती है तो वहां पहले से ही भारी जनसमूह उमड़ा होता है। मैदान के उत्तरी-पश्चिमी छोर पर रघुनाथ का रथ सुन्दर

कपड़ों से आवेष्टित करके सजाया होता है। रथ के शीर्ष पर चांदी का छत्र इसकी शोभा को बढ़ाता है। इस रथ का भीतर से पूरा ढांचा लकड़ी का है और इसमें पहिये भी लकड़ी के ही बने होते हैं। यहां पर राम-सीता की मूर्तियों को पालकी से उतार कर रथ में बने पीठासन पर रख के पूजन किया जाता है। इस समय रथ के समीप उमड़ती भीड़ को नियंत्रित करने का कार्य नाग देवता धूम्बल का रथ अद्भुत ढंग से निभाता है। जिसमें रथ उठाने वालों के कदम इतनी तेजी से भीड़ की ओर बढ़ते हैं कि भीड़ एकदम पीछे हट जाती है। लोग इस देवलीला को देखकर आश्चर्य-चकित रह जाते हैं कि जिस भीड़ को हटाने में पुलिस के जवानों को बहुत असुविधा रहती है, उसे धूम्बल नाग एक

झटके में हटा देता है। उधर रथ में मूर्ति पूजन के बाद पुजारी, पुरोहित, राजा, राजपरिवार के कुछ सदस्य तथा कुछ पताकाएं आदि उठाये निशानदार रथ की परिक्रमा करते हैं। परिक्रमा के सम्पन्न होते ही प्रारम्भ होती है भव्य रथ-यात्रा जो कि कुल्लू दशहरा की सर्वप्रमुख विशिष्टता एवं आकर्षण है। रथ यात्रा में श्रद्धालुओं की भीड़ रथ में लगे दो लम्बे-लम्बे रस्सों से जयघोष के साथ रथ खींचती है। उस समय जनता का अनवरत सैलाब एवं देवी-देवताओं के साथ गाजे-बाजे पर उठती उत्ताल तरंगों में समग्र वातावरण रणभूमि में प्रस्थान करते हुए रणबांकुरों की शौर्यपूर्ण प्रफुल्लता को जीवन्त करता है। जय-जयकार की उदात्त स्वर लहरियों में भक्ति भाव के सरस प्रवाह में सराबोर श्रद्धालु भगवान रघुनाथ के रथ को मैदान के मध्य में ला खड़ा करते हैं जहां पर कि रघुनाथ जी का मेला शिविर लगता है। यहां मूर्तियों को रथ से उतार कर शिविर में बने पूजा स्थल पर प्रतिष्ठित किया जाता है। इस दिन रथ यात्रा सम्पन्न होने के बाद आमन्त्रित मुख्य अतिथि द्वारा प्रदर्शनी मैदान में विकास प्रदर्शनियों का उद्घाटन तथा अवलोकन किया जाता है और रात्रि को श्रीलालचंद प्रार्थी कला केन्द्र में अन्तर्राष्ट्रीय लोक नृत्य उत्सव का विधिवत् उद्घाटन होता है।

दशहरा के बीच में

दशहरा मैदान में सभी देवी-देवताओं के पास भी सुबह-शाम पूजा-अर्चना होती है। दशहरे में प्रतिदिन चार-पांच बजे राजा की शोभायात्रा निकलती है। इस शोभायात्रा को 'राजा री जलेब' कहते हैं। यह जलेब रघुनाथ शिविर के समीप लगे राजा के शिविर से निकल कर मेला मैदान में चक्कर लगा के इसी शिविर में लौटती है। जलेब में राजा सुखपाल में बिठाये जाते हैं। आगे-आगे नृसिंह की घोड़ी चलायी जाती है। कुछ देवता गाजे-बाजे के साथ इसमें सम्मिलित होते हैं। किसी समय मेले में रात्रि को 'हौरण' लोक नाटक का प्रदर्शन होता था। इसमें दो व्यक्तियों के सहयोग से हिरण रूप बना पात्र देवताओं के शिविरों के पास तथा मेलों की दुकानों के आगे जाकर नाट्य प्रदर्शन करता है। रघुनाथ के शिविर में चन्दरौली और लोक नाटक बांठड़ा के प्रदर्शन होते थे। अब हौरण और बांठड़ा के आयोजन नहीं होते। केवल रघुनाथ शिविर में कुछ देर के लिए चन्दरौली नाच की औपचारिकता मात्र निभायी जाती है।

....शेष पृष्ठ 30 पर

सामाजिक समरसता को प्रति जागरूक हो समाज

– डॉ मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ मोहनराव भागवत ने सामाजिक समरसता पर बल दिया है। डॉ मोहन भागवत ने कुल्लू के देवसदन में कुल्लू जिला के देवप्रतिनिधियों की एक संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि समाज यदि एकमत होकर चलेगा तो इससे सामाजिक समरसता को बल मिलेगा। उन्होंने देव समाज का आह्वान करते हुए कहा कि सबको मन्दिर में प्रवेश, पानी का सामूहिक स्त्रोत तथा अन्तिम संस्कार के लिए समान श्मशान स्थल की व्यवस्था हो। समाज के अन्तिम व्यक्ति तक समरसता की अनुभूति हो, इस ओर सबके प्रयास रहने चाहिए। यदि ऐसा नहीं हुआ तो समाज को तोड़ने वाली ताकतें अधिक प्रभावी होंगी। इसके लिए जाति-बिरादारी के प्रमुखों तथा संत समाज को अधिक प्रयत्न करने होंगे। समाज में सद्भाव बढ़ाने के लिए सभी सामाजिक धार्मिक संगठनों को आपस में संवाद बढ़ाकर मिलकर प्रयास करने चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारा विचार तो एकात्मता का है, लेकिन यह हमारे आचरण में भी आना चाहिए, इसी में इसकी सार्थकता है। इस संगोष्ठी का आयोजन सत्संग सभा कुल्लू ने किया था। इस कार्यक्रम में कुल्लू जिला के देव प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

देव प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देव संस्कृति ही हिन्दू संस्कृति है। जब देव संस्कृति प्रभावी थी तब विश्व में कोई युद्ध नहीं थे। पर्यावरण भी शुद्ध था। हमने अपनी संस्कृति को छोड़ा इसलिए समस्याएं भी बढ़ीं। हमारी संस्कृति तो मानवता की भलाई के लिए काम करती है, इसमें कट्टरता के लिए कोई स्थान नहीं है। मतान्तरण के कारण देश में ऐसे राष्ट्र विरोधी तत्व खड़े हो गए जो देश को हानि पहुंचा रहे हैं। उन्होंने आह्वान किया कि सभी मत-पंथ-सम्प्रदाय एकजुट होकर चलें तभी भारत सुरक्षित रहेगा। परिवार व्यवस्था में क्षरण और पारिवारिक मूल्यों में आ रही गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि परिवार व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए प्रत्येक परिवार ने सप्ताह में एक बार सामूहिक भोजन व सामूहिक भजन और खुलकर चर्चा करनी चाहिए। बच्चों को अपनी संस्कृति का ज्ञान और गौरव बताऐंगे तो वह कभी भटकेंगे नहीं और देश के अच्छे नागरिक बनेंगे। अपने उत्सवों का उपयोग समाज प्रबोधन के लिए करें। इस अवसर पर देव प्रतिनिधियों ने परिचर्चा में भाग लिया और देव संस्कृति के संरक्षण के लिए अनेक उपयोगी सुझाव भी दिए। इससे पूर्व कुल्लू पधारने पर सरसंघचालक का स्थानीय परम्परा के अनुसार भव्य स्वागत किया गया। सत्संग सभा के अध्यक्ष श्री राकेश कोहली ने सबका धन्यावाद किया। इस अवसर पर संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख डॉ. मनमोहन वैद्य, उत्तर क्षेत्र कार्यवाह श्री सीताराम व्यास, प्रान्त संघचालक कर्नल (सेनि.) रूप चंद, सह प्रान्त संघचालक डॉ. वीरसिंह रांगड़ा, जिला संघचालक श्री राजीव करीर भी उपस्थित थे।❖

महामहिम राज्यपाल से भेंट वार्ता

विगत मास मातृवन्दना संस्थान के प्रतिनिधि मण्डल ने महामहिम राज्यपाल डॉ. देवव्रत आचार्य का अभिनंदन करने हेतु उनसे भेंट की। मातृवन्दना संस्थान के अध्यक्ष श्री अजय सूद, मातृवन्दना पत्रिका के सम्पादक डॉ. दयानन्द शर्मा और विश्व संवाद केंद्र के प्रमुख श्री दलेल ठाकुर सम्मिलित थे। इन्होंने हिमाचल में डा. देवव्रत आचार्य जी का राज्यपाल पद ग्रहण करने पर अभिनन्दन किया और हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। प्रतिनिधि मण्डल द्वारा महामहिम राज्यपाल को मातृवन्दना पत्रिका के विगत वर्षों के कुछ विशिष्ट विशेषांक एवं इस वर्ष के मासिक अंक भी भेंट किए गए।

महामहिम राज्यपाल ने भेंट वार्ता में कहा कि उन्होंने हिमाचल के लिए एक कार्य योजना तैयार की है। हिमाचल देवभूमि है। यहां की संस्कृति इसके अनुरूप हो, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है। उनका सर्वाधिक आग्रह समरसता पर था। प्रदेश में समरस समाज की स्थापना हेतु विभिन्न स्तरों पर कार्य हो। अस्पृश्यता निवारण, मंदिरों में सभी वर्गों का प्रवेश, सम्मिलित सहभोज आदि से समरसता का निर्माण होगा। जैविक कृषि, गोसंरक्षण, पर्यावरण, औषधीय वनस्पति आदि विषयों पर उन्होंने विस्तार से चर्चा की। ये सभी विषय उनकी कार्य योजना में शामिल हैं। युवा पीढ़ी संस्कारित हो इसलिए उत्तम चरित्र निर्माण करने वाली संस्कृतनिष्ठ

शिक्षा पर भी उन्होंने बल दिया। सौम्यप्रकृति सम्पन्न, अप्रतिम प्रतिभा के धनी, उद्भट्ट विद्वान् और राष्ट्र व समाज के उत्थान हेतु प्रयत्नशील महामहिम राज्यपाल डॉ. देवव्रत आचार्य जी के पदारूढ़ रहते हिमाचल प्रदेश को एक नई दिशा मिलेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।❖

विश्व बंधुत्व दिवस – 11 सितम्बर

11 सितंबर सन् 1893 भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम दिन है जब स्वामी विवेकानंद ने शिकागो में विश्वबन्धुत्व पर ऐतिहासिक भाषण दिया था। इतिहास में यह दिन 'विश्व बन्धुत्व दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर विवेकानंद केन्द्र शिमला एवं भाषा एवं संस्कृति विभाग ने संयुक्त रूप से मिलकर 'उठो व जागो' भाषण प्रतियोगिता का आयोजन गेयटी थियेटर शिमला में किया। इस प्रतियोगिता में 35 विद्यालयों से 55 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता रामकृष्ण मिशन के स्वामी नीलकंठानंद महाराज ने की । कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर हि0 प्र0 वि0 वि0 के कुलपति प्रो. ए.डी. एन. वाजपेयी उपस्थित रहे। कुलपति ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी जी ने पूरे विश्व को इस दिन एकता और विश्व बन्धुता का जो सन्देश दिया उससे भारत को एक नई पहचान मिली है। उनके द्वारा विश्व को जो मार्ग दिखाया गया है उस मार्ग चलकर ही धरती पर मानव जीवन सुरक्षित रह सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से स्वामी विवेकानंद के विचारों को अपने जीवन में उतारने का आग्रह किया। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी जी से जुड़े कई संस्मरण विद्यार्थियों को सुनाए। तत्पश्चात विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरण किया गया। उच्चतर व माध्यमिक स्तर पर तीन-तीन विजेताओं में मोनाल पब्लिक स्कूल के पुरूषार्थ जम्वाल प्रथम, सरस्वती विद्या मन्दिर विकासनगर की सीमा नेगी द्वितीय व रा0व0मा0पा0 टुटू के मुकेश कुमार तृतीय स्थान पर रहे। माध्यमिक स्तर पर सरस्वती विद्या मन्दिर विकास नगर की खुशबु ठाकुर प्रथम, डीएवी टुटू की चारू अगस्ति द्वितीय व सुकन्या ठाकुर

चियोग में 'मेरा गांव-मेरा गौरव' की शुरूआत

केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान (सीपीआरआई) शिमला के वैज्ञानिकों ने केंद्र सरकार के आदेशों के तहत मंगलवार को चियोग पंचायत तह0 ठियोग जिला शिमला में 'मेरा गांव-मेरा गौरव' कार्यक्रम की विधिवत् शुरूआत कर दी है। वैज्ञानिकों ने चियोग पंचायत के साथ लगते गांवों का चयन किया है, जिसमें वैज्ञानिक अपना 10 फीसदी समय देंगे और ग्रामीणों को अपनी रिसर्च, कृषि की उन्नत तकनीक और स्वच्छता के प्रति जागरूक करेंगे। कार्यक्रम का आगाज संस्थान के निदेशक डॉ. वीरपाल सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने किसानों को इस कार्यक्रम के महत्व के बारे में अवगत करवाया और सभी किसानों को 'मेरा गांव-मेरा गौरव' कार्यक्रम में भाग लेने व सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. एनके पांडेय ने किसानों को जानकारी दी कि चियोग पंचायत के सात गांवों को केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान द्वारा गोद लिया गया है। इसके अंतर्गत संस्थान के सभी वैज्ञानिक इन गांवों में जाकर किसानों को खेती से संबंधित जानकारी निरंतर प्रदान करते रहेंगे। कार्यक्रम में प्रधान वैज्ञानिक डॉ. कलोल प्रमाणिक, नौणी विश्वविद्यालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एचआर शर्मा तथा ठियोग ब्लॉक के वरिष्ठ पशुचिकित्सा अधिकारी, डॉ. सुरेन्द्र चौहान ने किसानों को फल उत्पादन, सब्जी उत्पादन तथा पशु पालन संबंधित विषयों पर जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन व धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. धीरज कुमार ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर चियोग पंचायत की प्रधान उमा चंदेल ने संस्थान के निदेशक, वैज्ञानिक गण एवं अन्य विशेषज्ञों का धन्यवाद किया और आशा जताई कि यह कार्यक्रम आगे भी किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। कार्यक्रम में इस क्षेत्र के लगभग 100 किसानों ने भाग लिया। ❖

डॉ. अनुराग विजयवर्गीय राजभाषा गौरव पुरस्कार से सम्मानित

हिन्दी दिवस समारोह में राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने आयुर्वेद विशेषज्ञ डॉ. अनुराग विजयवर्गीय को राष्ट्रीय राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार भारत सरकार गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा डॉ. अनुराग द्वारा लिखित पुस्तक 'आयुर्वेद सम्पूर्ण स्वास्थ्य का आधार' के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह प्लेनरी हाल, विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित किया गया। राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी समारोह में मुख्यातिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा की गई। कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजू तथा गृह राज्य मंत्री हीराभाई चौधरी भी उपस्थित थे। इससे पहले भी डॉ. अनुराग विजयवर्गीय को हिन्दी दिवस 2012 के अवसर पर भारत सरकार गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'जीवनशैली के रोग और आयुर्वेद' के लिए द्वितीय पुरस्कार से महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा ही सम्मानित किया जा चुका है। डॉ. अनुराग अनेक वर्षों से स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद विषयों पर लेखन कार्य कर रहे हैं तथा विश्व की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के जटिलतम रहस्यों की प्रमाणिक जानकारी पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से, सरल भाषा एवं रोचक शैली में जन सामान्य तक पहुंचाने के चुनौतीपूर्ण कार्य में मिशनरी भावना से जुड़े हुए हैं। उनके द्वारा लिखित पुस्तकें 'जीवनदायिनी हरड़, 'स्वास्थ्य संबंधी लोक कहावतें' 'जीवनशैली के रोग और आयुर्वेद' स्वास्थ्य रक्षक, बहेड़ा व 'अमृत फल आंवला' देश-विदेश में पाठकों द्वारा सराही गई हैं। ❖

वन रैंक, वन पेंशन से हिमाचल को लाभ

वन रैंक वन पेंशन का लाभ अब सूबे के उन लगभग 25 हजार पूर्व सैनिकों को भी मिलेगा, जिन्होंने प्री-मैच्योर रिटायरमेंट ली थी। प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद हिमाचल प्रदेश के पूर्व सैनिकों में खुशी की लहर है। कांगड़ा में 54,403, हमीरपुर 24,579, मंडी 14,850, ऊना 12,848, बिलासपुर 5,886, चंबा 3,671, सोलन 3,349, शिमला 3,444, सिरमौर 2,510 व कुल्लू के 1,685 पूर्व सैनिकों को इससे लाभ होगा। ब्रिगेडियर लाल चंद जसवाल ने प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा कि वीआरएस की शर्त हटने से देश के लाखों पूर्व सैनिकों को राहत मिली है। सैनिकों को पदोन्नति न मिलने या किसी अन्य कारण सेवानिवृति लेनी पड़ती है जिसे वीआरएस नहीं कहा जा सकता। सभी को वन रैंक वन पेंशन का लाभ देने के लिए प्रधानमंत्री बधाई के पात्र हैं। 25 साल बाद मोदी सरकार ने इसे पूरा किया है। मेजर विजय सिंह मनकोटिया ने कहा ऐतिहासिक एवं साहसी निर्णय पर हिम्मत दिखाते हुए प्रधानमंत्री ने पूर्व सैनिकों की मांग को पूरा किया है। इसलिए वे बधाई के पात्र हैं। पूर्व सैनिकों को पता है कि इस निर्णय के पीछे प्रधानमंत्री के अपने ही लोगों ने कई बार मुखालफत की और अफसरशाही का भी भारी दबाव था। प्रधानमंत्री के इस निर्णय से कइयों को नई जिंदगी मिली है। शेष मांगों को भी कमेटी के गठन के बाद शीघ्र निपटा लिया जाएगा। ❖

कुल्लुवी नाटी तोड़ेगी अपना रिकार्ड

'प्राइड ऑफ कुल्लू' के लिए जिला प्रशासन ने टारगेट पूरा कर लिया है। महानाटी के लिए 12 हजार महिलाओं ने रजिस्ट्रेशन करवाई है। प्रशासन ने इस बार महानाटी के लिए अपने आंकड़े को पार कर लिया है। हालांकि अभी काफी और महिलाएं भी रजिस्ट्रेशन करवा रही हैं। ऐसे में प्रशासन ने अभी से ही सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने शुरू कर दिए हैं। लिम्का बुक में दर्ज हो चुकी कुल्लुवी नाटी (प्राइड ऑफ कुल्लू) इस बार गिनीज बुक रिकॉर्ड भी बनाने को तैयार है। पिछले वर्ष दशहरे में आठ हजार से ज्यादा महिलाओं पुरूषों ने एक साथ कुल्लुवी नाटी डालकर लिम्का बुक में रिकार्ड बनाया था। इस बार उपायुक्त कुल्लू राकेश कंवर ने अपना ही रिकॉर्ड को तोड़ने के लिए 12 हजार का लक्ष्य रखा है जो आंकड़ा पूरा हो चुका है। यही नहीं, इस बार फैशन शो में भाग लेने के लिए भी महिला मंडलों ने भारी संख्या में नाम दर्ज करवाने शुरू कर दिए हैं। फैशन शो पूरी तरह से पारंपरिक होगा, जहां पर कुल्लुवी सहित हिमाचल के हर जिला की संस्कृति देखने को मिलेगी। ❖

हिंदुओं से ज्यादा बढ़े मुसलमान

सात राज्यों में अल्पसंख्यक हुए हिंदू

सन् 2011 की जनगणना के अनुसार पिछली बार (2001) की तुलना में हिंदुओं की तादाद 0.7 फीसदी कम हुई है, जबकि मुस्लिमों की आबादी 0.8 फीसदी बढ़ी है। केन्द्र सरकार की ओर से जारी रिपोर्ट में यह बात सामने आई है। रजिस्ट्रार जनरल एंड सेंसस कमिश्नर की ओर से इस बार धार्मिक आधार पर कराई गई जनगणना के नतीजे जारी किए गए। 'पापुलेशन बाय रीलिजियस कम्युनिटीज ऑफ सेंसस 2011' नाम से जारी रिपोर्ट में सिखों की आबादी भी कुल जनसंख्या की तुलना में 0.2 फीसदी कम हुई है। ईसाई और जैन धर्म मानने वालों की आबादी सन् 2001 से सन् 2011 के दौरान लगभग बराबर ही रही है। सन् 2001-2011 के बीच देश की कुल आबादी 17.7 फीसदी बढ़ कर 121.09 करोड़ हो गई है। कई लोगों का मानना है कि केन्द्र सरकार ने बिहार विधानसभा चुनाव से पहले धर्म आधारित जनगणना के आंकड़े जारी कर इलेक्शन कार्ड खेला है। उनका कहना है कि बिहार में अक्तूबर-नवंबर में चुनाव होंगे और राज्य की 243 सीटों में से 50 पर इसका असर पड़ सकता है।

राजनीतिक दल अल्पसंख्यकों के नाम पर भले ही किसी धर्म विशेष के अधिकारों की वकालत करते हों लेकिन हकीकत यह है कि देश में बहुसंख्यक माना जाने वाला हिंदू समुदाय भी सात राज्यों तथा एक केंद्र शासित प्रदेश में अल्पसंख्यक है। कई प्रदेश तो ऐसे हैं जहां हिंदुओं की आबादी 10 प्रतिशत से भी कम है। जनगणना-2011 के अनुसार मिजोरम नगालैंड, मेघालय, जम्मू-कश्मीर, अरूणाचल प्रदेश, पंजाब, मणिपुर और लक्षद्वीप में हिंदु समुदाय अल्पसंख्यक है। ये प्रदेश ईसाई या मुस्लिम बहुल हैं। कई प्रदेशों की कुल आबादी में हिंदुओं का अनुपात तेजी से कम हुआ है। राज्यवार देखें तो मिजोरम ऐसा राज्य है जिसकी कुल आबादी में हिंदुओं का अनुपात काफी कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार मिजोरम में मात्र 2.75 फीसदी हिंदू हैं।

राजनीतिक दल अल्पसंख्यकों के नाम पर भले ही किसी धर्म विशेष के अधिकारों की वकालत करते हों लेकिन हकीकत यह है कि देश में बहुसंख्यक माना जाने वाला हिंदू समुदाय भी सात राज्यों तथा एक केंद्र शासित प्रदेश में अल्पसंख्यक है। कई प्रदेश तो ऐसे हैं जहां हिंदुओं की आबादी 10 प्रतिशत से भी कम है। जनगणना-2011 के अनुसार मिजोरम नगालैंड, मेघालय, जम्मू-कश्मीर, अरूणाचल प्रदेश, पंजाब, मणिपुर और लक्षद्वीप में हिंदु समुदाय अल्पसंख्यक है। ये प्रदेश ईसाई या मुस्लिम बहुल हैं। कई प्रदेशों की कुल आबादी में हिंदुओं का अनुपात तेजी से कम हुआ है। राज्यवार देखें तो मिजोरम ऐसा राज्य है जिसकी कुल आबादी में हिंदुओं का अनुपात काफी कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार मिजोरम में मात्र 2.75 फीसदी हिंदू हैं। 2001 में वहां 3.55 फीसदी हिंदू थे लेकिन बीते दस वर्षों में उनकी आबादी का प्रतिशत घट गया। इसी तरह लक्षद्वीप में 2001 में 3.66 फीसद हिंदू थे जो 2011 में घटकर मात्र 2.77 फीसदी रह गए हैं। इसी तरह जम्मू-कश्मीर में भी हिंदुओं का प्रतिशत 29.63 से घटकर 28.44 रह गया है। पूर्वोत्तर के ही नगालैंड और मेघालय में भी हिंदू अल्पसंख्यक हैं। इन दोनों प्रदेशों में हिंदुओं की आबादी क्रमशः 8.75 फीसद और 11.53 फीसद है। मणिपुर में हिंदुओं की आबादी 41.39 फीसदी है जबकि 2001 में यह 46.01 फीसदी थी। इसी तरह अरूणाचल प्रदेश में हिंदुओं की आबादी 34.60 से घटकर 29.04 फीसदी रह गई है। पंजाब में भी हिंदू अल्पसंख्यक हैं। यह राज्य सिख बहुल है और यहां पर हिंदुओं की आबादी 38.49 फीसदी है। जिन राज्यों में हिंदू अल्पसंख्यक हैं उनमें से कई में उनकी जनसंख्या वृद्धि की दर भी काफी कम है। नगालैंड में तो सन् 2001 से सन् 2011 के बीच पूरे देश में जहां हिंदुओं की आबादी में 16.8 फीसदी वृद्धि हुई वहीं केरल में मात्र 4.9 फीसदी और लक्षद्वीप में 6.3 फीसदी की दर से हिंदुओं की संख्या बढ़ी।❖

मुद्दा तो गुलाम कश्मीर है

भारत का पाकिस्तान को दो-टूक जवाब

पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल राहिल शरीफ द्वारा कश्मीर को अधूरा एजेंडा बताए जाने के जवाब में भारत ने कहा है कि पड़ोसी देश के साथ एकमात्र मुद्दा गुलाम कश्मीर का है। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री जितेन्द्र सिंह ने दो-टूक शब्दों में कहा कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। यदि इससे जुड़ा कोई मुद्दा है, तो वह यह कि पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को किस तरह फिर से भारत में शामिल किया जाए। उन्होंने पड़ोसी देश को याद दिलाया कि पिछले 65-66 सालों से उसने इस पर अवैध कब्जा कर रखा है। जितेंद्र सिंह का यह जवाब राहिल शरीफ के उस भड़काऊ बयान के बाद आया है जिसमें उन्होंने कहा था कि कश्मीर पाकिस्तान का अधूरा एजेंडा है। रावलपिंडी में सन् 1965 के युद्ध की पचासवीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शरीफ ने कहा कि यदि भारत किसी तरह का दुस्साहस करता है, तो हम उसका माकूल जवाब देंगे। चाहे परंपरागत लड़ाई हो या गैर परंपरागत, हम हर परिस्थिति के लिए तैयार हैं। माना जा रहा है कि राहिल ने भारतीय सेना प्रमुख दलबीर सिंह सुहाग के बयान के जवाब में यह बात कही है। सुहाग ने पाकिस्तान की हरकतों को देखते हुए पिछले सप्ताह भारतीय सैनिकों को तेज और छोटे युद्ध के लिए तैयार रहने को कहा था। उन्होंने तीनों सेनाओं को सतर्क रहने की सलाह देते हुए कहा था कि भविष्य में युद्ध की तैयारियों के लिए ज्यादा समय नहीं होगा। इसलिए हमें हमेशा इस तरह के संक्षिप्त युद्धों के लिए तैयारियां उच्च स्तर पर

ARNI UNIVERSITY

अर्नी विश्वविद्यालय

काठगढ़, तहसील इन्दौरा, जिला कांगड़ा (हि०प्र०)

शिक्षा में सर्वांगिण विकास में सतत प्रयासरत हिमाचल देवभूमि का अग्रणी विश्वविद्यालय।

1. बालिका उच्च शिक्षा हेतु 50% फीस में छूट।
2. हिमाचल निवासीयों के छात्रो को 25% फीस में छूट।
3. प्रदेश का वृहद विश्वविद्यालय।
4. वातानूकूलित कक्षाएं।
5. Wi-Fi प्रांगण।
6. अनूसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग को केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा प्रयोजित कार्यक्रम के अनुसार निशुःल्क शिक्षा।
7. छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक छात्रावास की सुविधा।
8. रैगिंग मुक्त विश्वविद्यालय।
9. किताबों से सुस्जजित पुस्तकालय।
10. यातायात की सुविधा।
11. विद्यार्थियों के सर्वांगिंण विकास हेतु खेल के मैदान।

20 kms from Pathankot on Jalandhar Road

UNDER GRADUATE COURSES

* B.Tech in Civil, ME, ECE, EEE, CSE, Biotech & Automobile.
* Bachelor of Business Administration (BBA).
* Bachelor of Hotel Management and Catering Technology (BHMCT).
* Bachelor of Computer Application (BCA).
* B.Com & B.Com (Hons).
* B.Sc Non-Medical, Medical, Biotechnolgy & Microbiology.
* B.Sc (Hons) in Physics, Chemistry & Mathematics.
* BA & BA (Hons) in English, Economics

POST GRADUATE COURSES

* Master of Business Administration (MBA).
* Master of Computer Application (MCA).
* M.Tech in CSE, ME, EEE, Biotech & Civil.
* M.Sc. in Mathematics, Physics, Chemistry, Biotechnology, Microbiology, Botany & Zoology.
* M.A. English, Economics.
* M.Com.

SMS "ARNI" to 53030

ARNI UNIVERSITY

Campus: Kathgarh (Indora), Distt. Kangra (H.P.)-176401
Mob: 09888599102, 09888599129
Phone No: 01893-302000, Tollfree No: 1800-200-0049
Website: www.arni.in, www.arni.edu.in, Email: info@arni.in

भारत भाग्य विधाता

ज्ञान के बहते यहां निर्झर,
है जो वेदों का ज्ञाता,
पुनीत धरा के हम वासी,
भारत भाग्य विधाता।
निर्मल यमुना, गोदावरी, गंगा बहती,
तन मन तृप्त हो जाता।
अधर्म से होता उत्पात जब,
ईश्वर है यहां पर आता।
सबको जो है मार्ग दिखलाता,
भारत भाग्य विधाता।
सावन यहां झूम कर गाता,
एक रेशम की डोरी संग,
भैया बहन का कवच बन जाता।
देवों के अनेकों रूप यहां,
हर गांव की अपनी गाथा,
मजबूत आधारों पर अडिग खड़ा,
भारत भाग्य विधाता।
मेलों, पर्वों की होड़ यहां,
हर मन मस्त हो जाता,
नाना प्रकार के यहां हैं व्यंजन,
खाए जैसा हो भाता,
प्राकृतिक आभा का कहना क्या!
मन ठहर-ठहर है जाता,
भारत मां की सेवा को,
हर जवान आगे बढ़कर आता,
सब राष्ट्रों के ऊपर,
भारत भाग्य विधाता।

- मनोज कुमार शिव
कांगड़ा

एक तड़प

बस एक
तड़प हो मुझमें,
कि तड़पते लोगों की धड़कन
जगा सकूं
छाई लाचारी जबरन मिटा सकूं।
कौन जाने, कब, ये वृक्ष सूखे से,
राख न बन,
जिंदादिली का शोर मचाएंगे,
और फिर से भारत के पंछी
चहचहांएगे।
खूबसूरत सी बगिया में,
फूलों पर भंवरे गुन-गुनाएंगे,
हूं बेकरार,
है उस लम्हे का इंतजार
कि कब बाल मजदूर स्कूल जाएंगे,
किताबें पढ़ अपना बचपन बचाएंगे।
कब गरीब रोटी के बिना तरसे,
पेट भर पाएंगे,
कब रईसजादों की बढ़ती अमीरी
पर लगेगा विराम,
फिर कब सरकारी अफसर घूस छोड़
देश को बचाएंगे।
इन नाजायज चीजों को कब जायज बनाएंगे,
युवा जब नशे की लत छोड़ सेना में जाएंगे,
अश्लीलता बंद कर जब
नारी को देवी बनाएंगे,
ऐसा हिन्दोस्तां क्या हम देख पाएंगे।

सागरिका महाजन
खुशीनगर, नूरपुर, कांगड़ा

महत्वूपर्ण है वैचारिक उपस्थिति

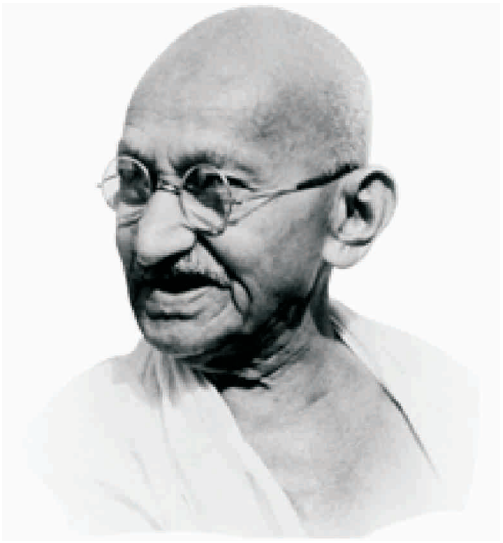

महात्मा गांधी आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके आदर्श और उनका दर्शन आज भी हमारे साथ है। किसी व्यक्ति की शारीरिक उपस्थिति से ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी वैचारिक उपस्थिति होती है और उससे भी महत्वपूर्ण होती है लोगों की उस व्यक्ति के आदर्श व विचार के प्रति आस्था। काफी समय पहले कांग्रेस पार्टी के नेता सीताराम केसरी ने कहा था कि गांधी जी के कहे अनुसार मौजूदा समय में राजनीति नहीं चल सकती है। गांधी की विचारधारा के आधार पर राजनीति नहीं चल सकती है तो क्या राजनीति को भ्रष्ट होने के लिए बेलगाम छोड़ देना चाहिए? गांधी जी ने कहा था कि व्यक्ति को अपने बुनियादी मूल्य नहीं छोड़ने चाहिए। बुनियादी मूल्य का अर्थ है अपनी जिम्मेदारी, दायित्व और नैतिक मूल्यों का अहसास। कोई भी व्यक्ति अगर राष्ट्रहित को प्रमुखता दे रहा है और अपने तात्कालिक लाभ से ऊपर उठ कर समाज व राष्ट्र को देख रहा है तो वह आदर्श व्यक्ति है। वह व्यक्ति राजनीति में भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। जाहिर है कि महात्मा गांधी के रास्ते पर चलने का मतलब साधु-सन्यासी होना नहीं है। गृहस्थ जीवन में रह कर आप बेहतर काम कर सकते हैं और राजनीति व समाज दोनों को शुद्ध रख सकते हैं। इसकी एक जरूरी शर्त रचनात्मकता और व्यापक दृष्टिकोण है। कोई भी संकीर्ण मानसिकता वाला व्यक्ति देश या समाज का भला नहीं कर सकता है। इस लिहाज से महात्मा का जीवन हमारे लिए प्रेरणा बन सकता है। अगर हम इन मूल्यों को अपनाते हैं तो महात्मा का जीवन सार्थक हो जाएगा, लेकिन दुर्भाग्य से आज ऐसा नहीं हो रहा है। स्वतंत्रता के बाद से ही सामाजिकता, राष्ट्रीयता, सद्भावना, रचनात्मकता और सामाजिक आंदोलन के मायने बदल रहे हैं। आजादी के समय देश का विभाजन हुआ था, लेकिन इसके बावजूद सारा देश एक था। कभी इस बात का अहसास नहीं होता था कि हम हिंदू हैं, दूसरा मुसलमान है या तीसरा ईसाई है। इतना सुंदर देश दो टुकड़े होकर भी जितना नहीं बंटा उससे ज्यादा आज बंट गया है कि भाई-भाई पर अविश्वास कर रहा है। ईर्ष्या का भाव बढ़ा है, विनम्रता में कमी आई है, भद्रता खत्म हो गई है, सुलझा हुआ स्वावलंबन नहीं रहा, हमने अपना आत्मगौरव खो दिया है और सारे कौटुंबिक बंधन खत्म कर लिए हैं। राष्ट्र और समाज उसकी प्राथमिकता में दूसरे नबंर पर आ गए हैं। राजनीति की दूषित करने का काम हो रहा है, सत्ता हासिल करने के लिए हर तरह की तिकड़म हो रही है। बापू से प्यार करने या उन्हें सम्मान देने के लिए जरूरी है कि हम देश से प्यार करें और उसे 'सम्मान दें।' यही बापू के लिए देश से प्यार करने का मतलब है।❖

गांधी जी ने कहा था कि व्यक्ति को अपने बुनियादी मूल्य नहीं छोड़ने चाहिए। बुनियादी मूल्य का अर्थ है अपनी जिम्मेदारी, दायित्व और नैतिक मूल्यों का अहसास। कोई भी व्यक्ति अगर राष्ट्रहित को प्रमुखता दे रहा है और अपने तात्कालिक लाभ से ऊपर उठ कर समाज व राष्ट्र को देख रहा है तो वह आदर्श व्यक्ति है। वह व्यक्ति राजनीति में भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। जाहिर है कि महात्मा गांधी के रास्ते पर चलने का मतलब साधु-सन्यासी होना नहीं है। गृहस्थ जीवन में रह कर आप बेहतर काम कर सकते हैं और राजनीति व समाज दोनों को शुद्ध रख सकते हैं।

वोकेशनल शिक्षा भी फायदेमंद

वोकेशनल के साथ अपने तकनीकी कौशल को निखार कर खुद को जॉब के लिए परफेक्ट बनाना चाहते हैं, तो अब आपके सामने कई विकल्प हैं। आइटीआइ और पॉलिटेक्निक के अलावा अब विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शुरू हो रहे बी.वोक. कोर्स के जरिए आप खुद को इंडस्ट्री की मांग के मुताबिक तैयार कर आसानी से जॉब पा सकते हैं।

श्यामक कुमार इन दिनों बेहद खुश हैं। हों भी क्यों न। उनकी मुंहमांगी मुराद जो पूरी हो रही है। दरअसल, पिछले दिनों किसी कारण पॉलिटेक्निक में अपने पसंदीदा ब्रांच में एडमिशन न मिल पाने के कारण वह थोड़े उदास थे। उन्हें लग रहा था कि उनका यह साल कहीं बेकार न चला जाए। इस आशंका में उन्होंने बीए में एडमिशन ले लिया था, पर दिल्ली की गुरू गोविंद सिंह आइपी यूनिवर्सिटी द्वारा विभिन्न ब्रांचों में आरंभ बी.वोकेशनल कोर्स ने उन्हें खुश होने का मौका दे दिया। श्यामक बैचलर ऑफ वोकेशनल यानी बी.वोक. (सोफ्टवेयर डेवलपमेंट) में एडमिशन लेना चाहते हैं। हालांकि इस यूनिवर्सिटी द्वारा ऑटोमोबाइल, रेफ्रिजरेशन एंड एयरकंडीशनिंग, प्रिंटिंग एंड, पब्लिकेशन, मोबाइल कम्युनिकेशन, इलेक्ट्रिक डिस्ट्रीब्यूशन मैनेजमेंट, कंस्ट्रक्शन टेक्निक, कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, एप्लॉयड आर्ट्स, इंटीरियर डिजाइनिंग आदि में भी बी.वोक कोर्स आरंभ किया गया है। साइंस स्ट्रीम से 50 प्रतिशत अंकों से बारहवीं पास लोग इन कोर्सों के लिए आवेदन कर सकते हैं। खास बात यह है कि इन कोर्सों के लिए 16 से 45 वर्ष तक की आयु के लोग अप्लाई कर सकते हैं, यानी जिन लोगों को अपनी पढ़ाई किसी कारण बीच में रोक देनी पड़ी थी और बाद में पढ़ना चाहते हुए भी जिन्हें कोई प्लेटफॉर्म नहीं मिल रहा था, उनके लिए बी.वोक. के रूप में बेहतरीन अवसर सामने आया है।

खासियत है लचीलापन

महत्वपूर्ण बात यह है कि तीन साल के इस कोर्स के दौरान आप अपनी सुविधा से एक या दो साल का कोर्स पूरा करने के बाद इसे बीच में भी छोड़ सकते हैं। ऐसा नहीं है कि बीच में कोर्स छोड़ने से आपको कोई नुकसान होगा। एक साल का कोर्स पूरा करने के बाद डिप्लोमा और दो साल का कोर्स पूरा करने के बाद एडवांस डिप्लोमा प्रदान किया जाता है। इसके आधार पर भी आपको इंडस्ट्री में जॉब मिल सकती है। हां, अगर आपने तीन साल का कोर्स सफलता के साथ पूरा कर लिया, तो बैचलर ऑफ वोकेशनल की डिग्री प्रदान की जाएगी।

खुल रहे नए रास्ते

इस तरह के कदम सिर्फ आइपी यूनिवर्सिटी ही नहीं, बल्कि देश के कई और कॉलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा भी उठाए जा रहे हैं। स्किल इंडिया की राह पर आगे बढ़ने के लिए अब विभिन्न तकनीकी विषयों में बी.वोक कोर्स आरंभ किए जा रहे हैं। नि:संदेह इसका सबसे ज्यादा फायदा गांवों-कस्बों और छोटे शहरों के उन युवाओं को मिलेगा, जिन्हें अभी तक मजबूरी में एकमात्र उपलब्ध बीए या बीएससी कोर्स ही करना पड़ता था।

एंटरप्रेन्योरशिप का मौका

आत्मविश्वास से भरे युवा कोर्स करने के बाद अपना खुद का काम आरंभ करके एंटरप्रेन्योरशिप की राह पर भी आगे बढ़ सकते हैं। आज इन सभी ट्रेड्स में शहरों से लेकर कस्बों-गांवों तक में डिमांड बढ़ रही है। मोबाइल कम्युनिकेशन, ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिक डिस्ट्रीब्यूशन मैनेजमेंट जैसे ब्रांच में तो अब गांव-गांव कुशल लोगों की जरूरत महसूस की जा रही है। ऐसे ट्रेड्स में ट्रेंड युवा अपने घर के पास ही काम शुरू करके अच्छी कमाई कर सकते हैं। अनुभव के साथ उनकी कमाई में इजाफा भी होगा। वे चाहें, तो अपने सामाजिक सरोकरों को महसूस करते हुए इलाके के बच्चों को ट्रेनिंग देकर उन्हें भी निपुण बना सकते हैं।

मिले उपयोगी प्रशिक्षण

इंडस्ट्री, बाजार, रोजमर्रा की जरूरतों को देखते हुए अन्य उपयोगी शॉर्टटर्म कोर्स भी आरंभ किए जा सकते हैं। इनमें प्लंबर, इलेक्ट्रिशियन, ड्राइवर, कारपेंटर, टीवी-फ्रिज-एसी इंजीनियर, लॉन्ड्री, हाउसकीपिंग, बारबर, साइकिल-रिक्शा मैकेनिक, स्कूटर-बाइक मैकेनिक, कार मैकेनिक, ट्रक-बस मैकेनिक, राजमिस्त्री आदि से संबंधित तमाम कोर्स हो सकते हैं।

मौके का उठाएं लाभ

युवाओं को चाहिए कि खुद को परिस्थितियों के हवाले करने की बजाय अपनी पसंद के अनुसार उपयुक्त कोर्स तलाशें और उसमें खुद को हुनरमंद बनाकर आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। इसके लिए उपयुक्त संस्थानों की तलाश करें। अगर आपने खुद को स्किल्ड बना लिया, तो फिर पीछे देखने की नौबत नहीं आएगी। हां, यह जरूर है कि कोर्स करने और काम शुरू करने के बाद भी खुद को नियमित रूप से इंडस्ट्री की मांग के अनुसार अपडेट करते रहें।❖

भारतीय नारी के अखंड सुहाग का प्रतीक व्रत करवा चौथ

भारतीय नारी के लिए 'करवा चौथ' का व्रत अखंड सुहाग को देने वाला माना गया है। वास्तव में करवा चौथ का व्रत-त्यौहार भारतीय संस्कृति के उस पवित्र बंधन का प्रतीक है जो पति-पत्नी के बीच होता है। भारतीय संस्कृति में पति को स्त्री के लिए परमेश्वर की संज्ञा दी गई है। यही कारण है कि विवाहित स्त्रियां इस दिन अपने पति की दीर्घायु एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करके चंद्रमा को अर्घ्य अर्पित कर व्रत को पूर्ण करती हैं। स्त्रियों में इस दिन के प्रति इतना श्रद्धा भाव होता है कि वे कई दिन पहले ही इस व्रत की तैयारियां शुरू कर देती हैं। यह व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को किया जाता है। इस दिन स्त्रियां खूब सजती संवरती हैं और भगवान से दिन भर के व्रत के बाद यह प्रण भी लेती हैं कि वे पति के प्रति मन, वचन, कर्म से पूर्ण तौर पर समर्पण की भावना रखेंगी। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चतुथ्री तिथि को मात्र चंद्र देवता की ही पूजा नहीं होती बल्कि शिव-पार्वती और स्वामी कार्तिकेय को भी पूजा जाता है। शिव-पार्वती की पूजा का विधान इसलिए किया जाता है कि जिस प्रकार शैल पुत्री पार्वती ने घोर तप करके भगवान शंकर जी को प्राप्त कर अखंड सौभाग्य प्राप्त किया वैसा ही उन्हें भी प्राप्त हो। वैसे भी गौरी-पूजन का कुंवारी कन्याओं और विवाहित स्त्रियों के लिए विशेष महत्व माना जाता है। भारतीय स्त्री के लिए अखंड सुहाग देने वाला माना गया यह व्रत करवा चौथ अन्य सभी व्रतों से कठिन कहा जाता है क्योंकि इस दिन महिलाएं दिन भर निर्जल रह कर रात्रि को चंद्रमा उदय होने पर उसे अर्घ्य देकर व्रत खोलती (भोजन करती) हैं। इस बीच दोपहर के बाद वे करवा चौथ की पौराणिक कथा सुनती हैं।

महाभारत काल में एक समय पाण्डवों के वनवास काल में जब अर्जुन तप करने इंद्रनील पर्वत की ओर चले गए तथा बहुत दिनों तक वापस नहीं आए तो द्रौपदी को चिंता हुई। श्री कृष्ण द्वारा द्रौपदी से चिंता का कारण पूछने के बाद उसकी चिंता का निवारण करने के लिए करवा चौथ का व्रत बताया। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार देवताओं तथा दैत्यों के बीच युद्ध में जब देवता पराजित हो रहे थे तो देवताओं को उनकी पत्नियों द्वारा ऐसा ही व्रत करने का परामर्श ब्रह्मा जी द्वारा दिए जाने पर देवताओं की पत्नियों द्वारा व्रत किए जाने पर देवताओं की रक्षा हुई थी। इसके अलावा करवा नाम की धोबन द्वारा भी यह व्रत पति की दीर्घायु की कामना से करने संबंधी भी एक कथा मिलती है। इस तरह करवा चौथ का व्रत पति की दीर्घायु का प्रतीक माना जाता है।

यह व्रत करवा चौथ के प्रथम रात्रि से ही मनाना प्रारंभ हो जाता है। रात में स्त्रियों की सास उन्हें सरगी देती हैं जिसमें चौदह स्वाल जिसे पुआ भी बोला जाता है, सिन्दूर, रोली, मैंहदी, चूड़ी तथा अन्य सुहाग की सामग्रियां देती हैं। कुछ लोगों में स्वाल सुबह-सुबह दिया जाता है जब सूर्योदय नहीं होता तथा उसमें से स्वाल खाकर स्त्रियां व्रत का संकल्प करती हैं तथा पूरे दिन कुछ न खाने का और न पीने का भी संकल्प करती हैं। सारा दिन महिलाओं में शाम के पकवानों की तैयारी चलती है। घरों में अच्छे-अच्छे और स्वादिष्ट पकवान बनते हैं और महिलाएं श्रृंगार करती हैं। दिन का समय बीतते ही सबसे पहले स्त्रियां पूजा की थाल सजा लेती हैं तथा सबसे पहले माता पार्वती और भगवान शिव शंकर की अराधना करती हैं और उसके पश्चात् करवा माता को स्मरण करके पूजा प्रारंभ करती हैं जिसमें महिलाएं कथा का पाठ करते-करते अपनी-अपनी थालियां बदल लेती हैं। थाली में एक छननी, दीपक, चावल, पानी का लोटा, रोली, स्वाल तथा टीका होना आवश्यक होता है। कथा समाप्त होने पर जिसके पास जो थाली पहुंचती है उसे उसी से पूजा करनी चाहिए उसके पश्चात् चंद्रमा के उदय होते ही छननी में दीया रखकर चंद्रमा के दर्शन करती हैं और उन्हें चावल चढ़ाती हैं और फिर उसमें से अपने पति का मुख देखती हैं और उनकी आरती उतारती हैं तथा उन्हें माथे पर टीका लगाने के बाद उन्हें पैर छूकर प्रणाम करती हैं तथा उसके पश्चात् पति अपनी पत्नी को पानी ग्रहण करवाते हैं और उनका व्रत सम्पूर्ण करवाते हैं तथा इस प्रकार इस व्रत की समाप्ति होती है। मुख्यत: यह पर्व विवाहित महिलाएं ही रखती हैं परंतु कई घरों में कुंवारी कन्याएं भी यह व्रत रखती हैं। ❖

3 दोस्तों ने शुरू किया ब्लड डोनर क्लब, अब जुड़े हैं 800 परिवार

हर साल महावीर जयंती पर 500 से अधिक यूनिट ब्लड दान किया जाता है

थैलीसिमिया से ग्रस्त एक बच्चे को ब्लड डोनेट करने के बाद तीन दोस्तों ने एक ब्लड डोनर संस्था बनाई जिसमें आज जैन समाज के 800 परिवार जुड़े हैं। संस्था द्वारा हर साल महावीर जयंती पर 500 से अधिक यूनिट ब्लड दान किया जाता है। यह संस्था एक दिन में सबसे अधिक ब्लड डोनेट कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज करवा चुकी है। संस्था तेरा पंथ युवक परिषद् से भी यह संस्था जुड़ी है। संस्था के प्रमुख राकेश जैन ने बताया कि जरूरतमंदों की मदद करने के लिए एक हेल्पलाइन 0161-2430297 भी चलायी जा रही है। राकेश ने बताया कि 10 साल पहले उनका बेटा प्रशांत जैन बीमारी के कारण डीएमसी में दाखिल था। उसी वॉर्ड में एक बच्चा बेड पर खेल रहा था। लेकिन उसके मां-बाप काफी चिंतित थे। पूछने पर उन्होंने बताया कि बच्चा थैलीसिमिया से ग्रस्त है। उसे ब्लड न मिला तो उसकी मौत हो सकती है। यह सुन वे परेशान हुए। फिर अपने दो दोस्तों से उन्होंने इस विषय पर चर्चा की और बच्चे को ब्लड डोनेट किया। उसी दिन से तीन दोस्तों ने मिलकर नि:स्वार्थ सेवा सोसाइटी की शुरूआत की। शुरू में डॉ. संदीप जैन, लवली जैन प्रधान, मुनीष जैन, भाविक जैन, गगन जैन, साहिल जैन, राहुल जैन, शिल्पी जैन, अरिहंत जैन, अमित जैन ने सोसाइटी की शुरूआत की थी। धीरे-धीरे संस्था के मेंबर बढ़ते गए। फिर संस्था ने अन्य संस्थाओं विजय वल्लभ सेना, भगवान महावीर सेवा संस्थान, केप इंडिया, तेरा पंथ युवक परिषद, जैन मिलन संघ, आत्म जैन सोसाइटी, कल्याण पार्श्व नाथ के अलावा अन्य संख्याओं को भी अपने साथ जोड़ा धीरे-धीरे संस्था का नाम प्रसिद्ध होता चला गया और लोगों ने हमारे काम की सराहना करते हुए संस्था के साथ जुड़ना शुरू कर दिया। आज संस्था के साथ करीब 800 परिवार जुड़े हुए हैं जो जरूरत पर हर किसी की मदद को तत्पर रहते हैं।❖

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

दूरभाष पर सम्पर्क करें।

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

संस्कृतं वदाम (षष्ठं सोपानम्)

1. **वार्तालापः वाक्यानि (छात्र संलापः)**

(क) भवान् कस्मिन् महाविद्यालये पठति?
आप किस विद्यालय में पढ़ते हो।

(ख) अहं शम्भूनाथ महाविद्यालये पठामि।
मैं शम्भूनाथ महाविद्यालय में पढ़ता हूं।

(ग) भवान् प्रथम कालांशे न आसीत्।
आप प्रथम कक्षा में नहीं थे।

(घ) अद्य मम उत्थाने विलम्बः अभवत्।
आज मुझे उठने में देर हो गई।

(ङ) अतः लोकयानं न प्राप्तम्।
अतः बस नहीं मिली।

(च) अद्य गणितः प्राध्यापकः न आगतवान्।
आज गणित के अध्यापक नहीं आए।

(छ) ओह! सम्यक् न अद्य पाठः श्रोतव्यः आसीत्।
ओह ठीक नहीं है, आज पाठ सुनना था।

(ज) श्वः महाविद्यालये भाषण-स्पर्धा अस्ति।
कल महाविद्यालय में भाषण स्पर्धा है।

(झ) भवति भागं गृह्णाति किम्?
आप भाग लेंगी क्या?

(ञ) अहं न मम सखी भागं गृह्णाति।
मैं नहीं मेरी सखी भाग लेगी।

2. **शब्द कोषः (फलवर्गः)**

कदली (स्त्री.)	केला
सेवम् (नपु.)	सेब
बदरी (स्त्री.)	बेर
जम्बुः (पु.)	जामुन
नारङ्ग (पु.)	संतरा
कालिन्दम् (पु.)	तरबूज
नारिकेलः (पु.)	नारियल
दृढ़बीजम् (नपु.)	अमरूद
द्राक्षा (स्त्री.)	अङ्गूर
पम्पाफलम् (नपु.)	पपीता
दाडिमः (पु.)	अनार
आम्रम् (नपु.)	आम

3. **व्याकरणम् (भूतकालः- लङ् लकार)**

हिन्दी भाषा के समान ही संस्कृत में भी तीन काल होते हैं- वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल। (वर्तमान काल पिछली पञ्चम सोपान में लिखा जा चुका है) हिन्दी के भूतकाल वाचक शब्द था, थी, थे, खाया, खायी, खाये, (सभी क्रिया के अनुसार) खा चुकी, खा चुके आदि के लिए संस्कृत में सामान्यतः सुविधा अनुसार लङ् लकार का प्रयोग होता है।

उदाहरणम्- राम वन में गए- रामः वनम् अगच्छत्। मैं अमृत पी चुका- अहम् अमृतम् अपिबम्। सीता राम की पत्नी थी- सीता रामस्य पत्नी आसीत्। उसने लड्डू खाया- सः मोदकम् अखादत्। उसने विद्या पढ़ी- सः विद्याम् अपठत्। हमने वेदमंत्र बोला- वयं वेदमंत्रम् अवदाम। ❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

अब तीन साल में फल देगा हरड़ का पौधा

कभी हरड़ के पेड़ जंगल में ही होते थे और दादा पौधा रोपता था व पोता उसका फल खाता था, लेकिन वैज्ञानिकों ने 'दादा लगाए पोता खाए' की कहावत को बदल दिया है। वैज्ञानिकों ने जैविक तकनीक से हरड़ के अति आधुनिक पौधे तैयार किए हैं, जो अब तीसरे साल से ही फल देना शुरू कर देंगे। किसान दिन रात मेहनत करते थे, लेकिन लावारिस व जंगली पशु और बंदर फसल को तबाह कर देते थे। कृषि छोड़ चुके किसानों ने रूख हरड़ की खेती की तरफ किया है। नूरपुर के निकट जाच्छ स्थित क्षेत्रीय बागवानी एवं अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने शोध से हरड़ के अति आधुनिक पौधे तैयार किए हैं। इनको बंजर व कम उपजाऊ भूमि पर भी उगाया जा सकता है। जैविक विधि से तैयार पौधे अब तीसरे साल ही फल देना शुरू कर देते हैं, जबकि सातवें व आठवें साल से यह पौधे बंपर फसल देने लगते हैं। किसानों ने हरड़ को व्यवसायिक खेती के रूप में अपनाना शुरू कर दिया है। आज विश्वभर में लोगों का झुकाव आयुर्वेद की तरफ बढ़ा है, इससे इसकी मांग काफी ज्यादा है। केंद्र ने एक पौधे के कीमत 30 रूपए रखी है।

एक किसान की उन्नत सोच ने कृषि वैज्ञानिकों को भी सोचने को मजबूर कर दिया है। कभी उनकी प्रेरणा से प्रेरित इस बागवान ने हरड़ की ऐसी उन्नत किस्म पौध तैयार की कि वे उसमें जिज्ञासा दिखा रहे हैं। देहरा उपमंडल में सनोट गांव में लहलहाती हरड़ की फसल उनके शोध का केंद्र बन गई है। किसान राजेंद्र सिंह के बगीचे में शोध संस्थान नेरी के वैज्ञानिकों से हरड़ के पौधे खरीदे। उसकी मेहनत रंग लाई और अब उसके बगीचे में 22 हरड़ के पेड़ फल देने लगे हैं। उसकी सफलता के चर्चे शोध संस्थान नेरी तक पहुंचे तो कृषि वैज्ञानिक भी शोध के लिए सनोट गांव पहुंच गए हैं। वे राजेंद्र के बगीचे में इस पर सर्वे कर रहे हैं कि हरड़ के फल में कितनी गुणवत्ता है। प्रदेश ही नहीं पाकिस्तान व अफगानिस्तान से व्यापारी हरड़ खरीदने के लिए पहुंचे हैं।

एक पेड़ से तीन हजार तक कमाई

''हरड़ के जैविक विधि से अति आधुनिक पौधे तैयार किए गए हैं, जो तीसरे साल से ही फल देना शुरू कर देंगे जबकि सातवें से आठवें साल में यह पौधे बंपर फसल देंगे। एक पेड़ से एक सीजन में एक से तीन रूपए तक कमा सकते हैं। फसल स्थानीय ठेकेदारों के साथ-साथ पंजाब व दिल्ली की मंडियों में बेची जा सकती हैं। जाच्छ केंद्र में करीब चार हजार हरड़ के पौधे तैयार किए थे, जोकि किसानों ने खरीद लिए हैं, अब हरड़ के पौधों की पैदावार कम व मांग ज्यादा हैं। किसान बंजर व कम उपजाऊ भूमि में हरड़ की खेती कर सकते हैं। हरड़ की खेती किसानों की आर्थिक रूप मजबूत कर सकती है। किसान हरड़ व चंदन की खेती करें।'' ❖

भारत में हुई थी चावल की पहली खेती

भारत के साथ चीन का झगड़ा सिर्फ अरूणाचल प्रदेश की सीमा को लेकर ही नहीं, बल्कि यह वैज्ञानिक स्तर पर भी है। चीन हमेशा से दावा करता आया है कि चावल की सबसे पहले खेती उसके यहां हुई थी। हालांकि कुछ भारतीय वैज्ञानिकों ने इस दावे को नकारा है। उनके मुताबिक आज भारत में उगाई जाने वाली चावल की किस्मों की सबसे पहले खेती भारत में ही हुई थी और इसके उनके पास पुख्ता सबूत भी हैं। भारतीय कृषि शोध अनुसंधान (आईएआरआई) के शोधकर्ता नागेंद्र कुमार बताते हैं कि हमारे शोध में यह सामने आया है कि चावल की खेती सबसे पहले भारत में की गई थी। यह शोध जर्नल नेचर साइंटिफिक रिपोर्ट्स में प्रकाशित हुआ है। इसमें शोधकर्ताओं ने भारत में उगाई जाने वाली चावल की किस्मों को लेकर कई अहम सबूत दिए हैं। इन सबूतों से यह पुख्ता हो जाता है कि आज जो किस्में चावल की भारत में उग रही हैं, वह चीन से लाई गई नहीं बल्कि यहीं की पैदाइश है।❖

विजयादशमी-विजय का उत्सव

- डॉ. मनमोहन वैद्य

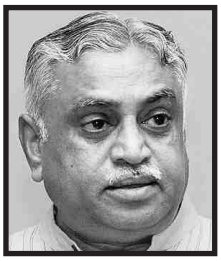

विजयादशमी विजय का उत्सव मनाने का पर्व है। यह असत्य पर सत्य की, अन्याय पर न्याय की, दुराचार पर सदाचार की, तमोगुण पर दैवीगुण की, भोग पर योग की, असुरत्व पर देवत्व की विजय का उत्सव है। भारतीय संस्कृति में त्यौहारों की रंगीन शृंखला गुंथी हुई है। प्रत्येक त्यौहार किसी न किसी रूप में कोई संदेश लेकर आता है। लोग त्यौहार तो हर्षोल्लास सहित उत्साहपूर्वक मनाते हैं किंतु उसमें निहित संदेश के प्रति उदासीन रहते हैं। विजयादशमी यानि कि दशहरा आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को भगवान् श्रीराम के द्वारा दैत्यराज रावण का अंत किए जाने की प्रसन्नता व्यक्त करने के रूप में और माँ दुर्गा द्वारा आतंकी महिषासुर का मर्दन करने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इसके साथ इस पर्व का संदेश क्या है इसके विषय में भी विचार करने की आज आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति हमेशा से ही वीरता की पूजक एवं शक्ति की उपासक रही है। शक्ति के बिना विजय संभव नहीं है। इसीलिए हिन्दुओं के सभी देवताओं द्वारा कोई ना कोई शस्त्र धारण किया हुआ दिखता है। इस शक्ति का उपयोग आवश्यकता पड़ने पर ही, आसुरी शक्ति या दुष्टता का विनाश कर धर्म की स्थापना के लिए किया गया है। इसीलिए सुशील शक्ति की उपासना सतत् करते रहने की आवश्यकता है। यह संदेश देने के लिए स्थान-स्थान पर शक्ति के प्रतीक के रूप में विजयादशमी के निमित्त शस्त्र पूजन करने की परंपरा भारत में है। एक पुरूष कितना उत्तम हो सकता है इसका आदर्श उदाहरण ''राम'' हैं। वे सत्य, मर्यादा, विवेक, प्रेम, त्याग की पराकाष्ठा हैं। मानव से महामानव तक की संपूर्ण यात्रा हैं। इन गुणों के कारण ही भारतीय जनमानस आज सदियों के पश्चात् भी उनके आगे नतमस्तक है, उनके गुणगान सतत् गा रहा है। वे मर्यादा पुरूषोतम हैं। दूसरी ओर रावण प्रतीक है अहंकार का, दुष्टता का, आत्मकेंद्रिता का, अभद्र सम्पन्नता का, उद्दंड भौतिकता का, अत्याचार का। हमारे सभी के अन्दर राम और रावण दोनों विद्यमान होते हैं। उनका आपस में सतत् संघर्ष चलता रहता है। विजयादशमी के पर्व पर हमें संकल्प लेने चाहिए एवं प्रयास करने चाहिए कि हमारे अंदर का राम शक्तिशाली हो, उस उद्दंड रावण को परास्त कर विवेकी राम की विजय हो।

हमारे राष्ट्र जीवन में भी राम एवं रावण दोनों विद्यमान हैं। कभी यह मारीच के समान सुवर्णमृग का लुभावना रूप लेकर आता है, या शूर्पनखा के रूप में झूठा आकर्षण लेकर आता है, या कभी खर दूषण के रूप में आतंकवादी बनकर अपनी प्राचीन संस्कृति पर खुला आक्रमण करता दिखता है, या अपने सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण का निमित्त बन रहा है या संस्कृति के प्रतीक एवं रक्षक ऐसे लोगों पर आक्रमण करते दिख रहा है। भगवान राम ने ऐसी राक्षसी राष्ट्रीय घातक वृति एवं शक्ति को परास्त करने के लिए सभी राष्ट्रवादी, धर्मप्रेमी संस्कृति रक्षकों को एकत्र कर संगठित किया था और इस संगठित शक्ति के आधार पर रावण को तथा उसकी आसुरी शक्ति को परास्त किया था। श्रीराम के विजय में संगठित राष्ट्रीय शक्ति का जितना महत्व था उतना ही या उससे अधिक महत्व श्रीराम के शुद्ध आचरण एवं विशुद्ध चरित्र का था। इसलिए हिन्दू जीवन मूल्यों के प्रकाश में चरित्रवान् लोगों के आचरण के द्वारा निर्माण होने वाली विजयशालिनी संगठित शक्ति के द्वारा ही समाज के रावण और आसुरी शक्ति को हम परास्त करने में सफल होंगे। ये रावण और उसके अनुचर सुदूर किसी एक विशिष्ट प्रदेश में नहीं है बल्कि समाज जीवन में जगह-जगह अपने उन्मादी अत्याचार एवं हिंसा करते दिखते हैं, इसलिए सारे देश में जागृत जनता के संगठित केंद्र जगह-जगह खड़े करने होंगे। ग्राम-ग्राम तक ऐसी रामसेना खड़ी करने का उद्यम करना

पड़ेगा। यह ग्राम-ग्राम की रामसेना अपनी संगठित शक्ति से तथा अपने विशुद्ध राष्ट्रीय आचरण द्वारा धर्म एवं अपनी सनातन संस्कृति का रक्षण करने के राष्ट्रीय कार्य में सक्रिय हो। यही इस विजय पर्व का संदेश है।

अलग-अलग युगों में रावण के भिन्न-भिन्न चेहरे रहे हैं। आधुनिक परिवेश में विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के समक्ष आतंकवाद का असुर सुरसा की भाँति मुंह बायें खड़ा है। इसके साथ-साथ मंहगाई, बेरोजगारी, सामाजिक विषमता, जातिवाद, मजहबी अलगाववाद जैसी अनेकानेक समस्याएं आज हमारे अपने राष्ट्र के लिए चुनौती बनी हुई हैं। इनका समाधान करने के लिए निश्चित रूप से लोकनायक राम की भाँति सीमित साधनों का विवेकपूर्ण रीति से उपयोग करके, शक्ति का उपयोग करना होगा। आज के संदर्भ में सभी समस्याओं का समाधान करने के लिए किसी का वध करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि रावण होने का अर्थ किसी व्यक्ति विशेष से नहीं है बल्कि उसकी सोच रावण है, उसके दृष्टिकोण में रावण है, उसकी मानसिकता में रावण है जो किसी दूसरे की प्रसन्नता और उन्नति देख द्वेष से भर उठता है। उनकी भावनाओं में रावण है जो अपने राष्ट्र एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को विस्मृत कर देते हैं। उनके ज्ञान में रावण है जो मात्र धन के लिए अपने पद प्रतिष्ठा का दुरूपयोग करते हैं। हर व्यक्ति के अन्दर किसी न किसी रूप में एक रावण छिपा है। किंतु किसी व्यक्ति को मारने से रावण नहीं मरेगा अपितु उसके बुरे विचारों, संकीर्ण मानसिकता, दृष्टिकोण आदि का सही ढंग से उपचार करना होगा। यह कार्य कठिन है किंतु असंभव नहीं। विजयादशमी दिन ही विजय का है। यह विश्वास पुरातनकाल से चला आ रहा है। कहते हैं कि इस दिन ग्रह नक्षत्रों की स्थिति भी ऐसी होती है जिससे किए हुए कार्य में विजय निश्चित होती है। मां भगवती को इस दिन विजया के रूप में पूजा जाता है। विजयादशमी संकल्प लेने का, संकल्पित हो देश सेवा का व्रत लेने का पर्व है। अपने अंदर चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण का व्रत लेने का पर्व है। लाखों संकट क्यों न आ जाएं धैर्य नहीं खोना है। राम की भाँति अटल रहेंगे तो विजय अवश्य ही होगी। समस्याओं का हल साधनों में नहीं साधना में निहित है। समाज परिवर्तन का संकल्प लेना होगा। मात्र अंधकार को कोसने से अंधकार नहीं मिटेगा। दीया जलाकर प्रकाश फैलाना होगा। चरैवेति-चरैवेति के अनुसार अपने कार्य में लगे रहकर लक्ष्य प्राप्ति तक, विजय प्राप्ति तक पीछे मुड़कर नहीं देखना है। इसी संकल्प को मन में सुदृढ़ता से धारण कर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रथम सरसंघचालक प.पू हेडगेवार जी ने भारत माता को परम् वैभव के स्थान पर प्रतिष्ठित करने के लिए सन् 1925 में विजयादशमी के दिन ही इस संगठन की स्थापना की थी। जो कि आज एक सुदृढ़ वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है और अपनी जड़ें चारों दिशाओं में जमाये विश्व का सबसे बड़ा और मजबूत स्वयं सेवी संगठन है जोकि इस वर्ष विजयादशमी के दिन गौरवमयी 90 वर्ष पूर्ण करने जा रहा है। कितने विघ्न आये, बाधाएं आयीं किन्तु सभी स्वयंसेवक संगठित हैं, अटल हैं, ध्येय मार्ग पर अनवरत बढ़ते जा रहे हैं। हर हाल में राष्ट्र की रक्षा एवं उन्नति के लिए कृत संकल्प हैं और निरंतर कार्यरत हैं और विजय की आशा में कर्तव्य पथ पर अग्रसर हैं। तो आइये हम सब राष्ट्रभक्त इस विजय उत्सव पर मर्यादा पुरूषोतम श्रीराम जी के जीवन से सात्विकता, आत्मीयता, निर्भीकता एवं राष्ट्र रक्षा की प्रेरणा लें तथा राष्ट्र विरोधी प्रछन्न तत्वों से संघर्ष करने के साहस का परिचय दें तो भारतवर्ष की एकता, अखंडता, नैतिकता तथा चारित्रिक सौम्यता के निर्माण के क्षेत्र में अद्भुत सराहनीय प्रयास होगा। यही हमारी विजय होगी, यही राष्ट्र के प्रति हमारी सर्वोतम भेंट होगी।❖

अ.भा. प्रचार प्रमुख

एक पुरुष कितना उत्तम हो सकता है इसका आदर्श उदाहरण ''राम'' है। वे सत्य, मर्यादा, विवेक, प्रेम, त्याग की पराकाष्ठा है। मानव से महामानव तक की संपूर्ण यात्रा हैं। इन गुणों के कारण ही भारतीय जनमानस आज सदियों के पश्चात् भी उनके आगे नतमस्तक है, उनके गुणगान सतत् गा रहा है। वे मर्यादा पुरूषोतम है। दूसरी ओर रावण प्रतीक है अहंकार का, दुष्टता का, आत्मकेंद्रित्ता का, अभद्र सम्पन्नता का, उद्दंड भौतिकता का, अत्याचार का। हमारे सभी के अन्दर राम और रावण दोनों विद्यमान होते हैं। उनका आपस में सतत् संघर्ष चलता रहता है। विजयादशमी के पर्व पर हमें संकल्प लेने चाहिए एवं प्रयास करने चाहिए कि हमारे अंदर का राम शक्तिशाली हो, उस उद्दंड रावण को परास्त कर विवेकी राम की विजय हो।

आतंक के पर्याय के खिलाफ मुस्लिम विद्वानों का फतवा
आइएस कर रहा है गैर इस्लामी काम

आखिरकार भारतीय मुसलमान आइएस के खिलाफ लामबंद होने लगे हैं। एक हजार से अधिक इस्लामिक विद्वानों और मुफ्तियों ने फतवा जारी कर आतंक का पर्याय बन गए आइएस की करतूतों को गैर-इस्लामी करार दिया है। इन फतवों को संयुक्त राष्ट्र महासचिव को भेजकर दूसरे देशों के मुफ्तियों से ऐसा ही फतवा जारी कराने की अपील की गई है। फतवा जारी करने वालों में दिल्ली जामा मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी, अजमेर शरीफ और निजामुद्दीन के प्रमुख शामिल हैं। भारत में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में मुस्लिम विद्वानों और मुफ्तियों ने एक साथ आइएस के खिलाफ फतवा जारी किया है। अभी तक आइएस जिहाद के नाम पर दुनिया भर के मुस्लिम युवाओं को भर्ती करती रही है और अनजान लड़के उसकी जाल में फंस भी रहे हैं। माना जा रहा है कि इस संयुक्त फतवे से कम-से-कम भारतीय युवाओं में पैठ बनाने की आइएस की कोशिशों को झटका लगेगा। फतवों में कहा गया है कि आइएस की करतूत इस्लाम के खिलाफ है। इसके अनुसार इस्लाम में महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की हत्या की सख्त मनाही है, लेकिन आइएस के आतंकी हर दिन ऐसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। मुंबई के डिफेंस साइबर के प्रमुख अब्दुल रहमान अनजारी ने देश भर के मुस्लिम विद्वानों और मुफ्तियों से आइएस की गतिविधियों के बारे में राय मांगी। सभी ने एक सुर में इसे गैर इस्लामिक करार देते हुए फतवा जारी कर दिया। अनजारी ने 1050 मुस्लिम विद्वानों और मुफ्तियों द्वारा जारी फतवे को संयुक्त राष्ट्र महासचिव बान की मून को भेज दिया है। मून से दूसरे देशों के मुस्लिम विद्वानों और मुफ्तियों से ऐसे ही फतवा जारी कराने की अपील की गई है। ताकि पूरी दुनिया में मुस्लिम युवाओं को आइएस के दुष्प्रचार से बचाया जा सके।❖

सभी शरणार्थियों को पनाह देने का अर्थ होगा आइएस की जीत

फ्रांस ने चेताया है कि सीरिया और इराक के सभी शरणार्थियों को पनाह देना एक भूल होगी और यह एक तरह से आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) की जीत होगी। जबकि जर्मनी ने यूरोपीय देशों से संकट से निपटने के लिए और प्रयास करने को कहा। इराक, जॉर्डन, तुर्की और लेबनान समेत करीब 60 देशों के मंत्रियों ने शरणार्थियों की वापसी और मानवता के प्रति अपराध को रोकने को लेकर मंगलवार को बैठक की। इसमें फ्रांस ने मध्य पूर्व को लेकर कार्य योजना बनाने पर जोर दिया। फ्रांस के विदेश मंत्री लॉरेंट फेबियस ने कहा कि सभी शरणार्थी यूरोप या अन्य जगह चले जाएं तो यह आइएस की जीत होगी। सम्मेलन में पड़ोसी देशों में शरणार्थियों की स्थिति सुधारने के लिए वित्तीय मदद का वादा किया गया। इसके तहत इंफ्रास्ट्रक्चर के पुनर्निमाण से लेकर बुनियादी सेवाओं को फिर से कायम किया जाएगा।❖

गोविंद ठाकुर,
विधायक (भाजपा)
हिमाचल प्रदेश विधानसभा

सभी प्रदेश वासियों
को
अंतर्राष्ट्रीय कुल्लू दशहरा
उत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

मानव सिर के प्रत्यारोपण की तैयारी

मानव इतिहास में पहली बार मानव सिर का सफल प्रत्यारोपण करने की तैयारी है। जल्द ही चीन और इटली के ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ रूस के एक कंप्यूटर वैज्ञानिक पर यह प्रयोग करेंगे। मानव सिर का यह क्रांतिकारी प्रत्यारोपण अगर सफल रहा तो चिकित्सा क्षेत्र में कई लाइलाज बीमारियों का उपचार संभव हो जाएगा। बीजिंग में हारबिन मेडिकल यूनिवर्सिटी से जुड़े अस्पताल में इटली के सरजियो कानावेरो चीनी सर्जन रेन झियोपिंग के साथ मिलकर मानव सिर के प्रत्यारोपण का जटिल ऑपरेशन करेंगे। सरजियों कानावेरो और रेन झियोपिंग ने अपनी एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की टीम बना ली है। इन दोनों वैज्ञानिकों ने तीस वर्षीय रूसी कंप्यूटर वैज्ञानिक वैलेरी स्पिरिदोनासेव की पहचान की है जो मांसपेशीय दुर्विकास (मस्कुलर डायस्ट्रोफी) के मरीज हैं। वैलेरी ने कुछ माह पूर्व ही इस शोध का सब्जेक्ट बनने की इच्छा जताई थी। डॉ. कानावेरो ने ऑपरेशन की रणनीति तैयार कर ली है। वह पहले वैलेरी स्पिरिदोनोव के सिर की रक्त आपूर्ति रोकने के बाद उनके सिर को बर्फ से ठंडा करेंगे। ताकि मस्तिष्क जीवित बना रहे। हालांकि दोनों ही वैज्ञानिक मानते हैं कि इस ऑपरेशन में अभी भी कई दिक्कतें हैं। जैसे तंत्रिका तंत्र को जोड़ना, रक्त कोशिकाओं और रीढ़ की हड्डी के साथ खोपड़ी को इस तरह से लगाना कि शरीर दूसरे के सिर को अस्वीकार न करे। इन तकनीकी दिक्कतों के अलावा, इस दुर्लभ ऑपरेशन के लिए दोनों वैज्ञानिकों को विशेष उपकरण बनाने होंगे। रेन को उम्मीद है कि ऐसे प्रयोग से रीढ़ की हड्डी में चोट, कैंसर या मांसपेशीय दुर्विकास का भी इलाज भविष्य में संभव हो सकेगा। ❖

हिंदी सोशल साइट 'मूषक' लांच

ट्विटर, फेसबुक जैसी सुविधा हिंदी में देने के लिए सोशल नेटवर्किंग साइट 'मूषक' का भोपाल में औपचारिक लोकार्पण किया गया। 'मूषक' के प्रमुख अनुराग गौड़ ने बताया कि उनका उद्देश्य हिंदी और देवनागरी को आज की पीढ़ी के लिए सामयिक और प्रचलित बनाना है। अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट पर अंग्रेजी को महत्व दिया जाता है। हिंदी को दोयम दर्जे की समझा जाता है। श्री गौड़ ने कहा कि देश में लगभग 55 करोड़ लोग हिंदी लिख सकते हैं और 40 करोड़ लोग इंटरनेट से जुड़े हैं। इंटरनेट का उपयोग करने वालों को हिंदी में कंटेंट उपलब्ध हो सकें, इसलिए उन्होंने यह प्रयास किया है। इस साइट पर लोग सीधे हिंदी में टाइप कर सकते हैं या रोमन में लिखकर उसे हिंदी में बदल सकते हैं। उन्होंने बताया कि दो साल की तैयारी के बाद उन्होंने यह साइट शुरू की है। भोपाल में दस सितंबर से दसवां विश्व हिंदी सम्मेलन शुरू हो रहा है, इसलिए इस मौके पर यहां इस साइट को शुरू किया गया है।❖

साभार: दिव्य हिमाचल

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

हिन्दुत्व की गहरी जड़ें हैं हिन्दुस्तानी वट वृक्ष में

डॉ. आर.सी. मिश्रा

गोआ के एक मन्त्री महोदय ने कुछ समय पहले सही ही तो कहा था कि वह ''हिन्दु ईसाई'' हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत ने कह दिया कि हमारा हिन्दू राष्ट्र है और हिन्दुत्व ही हमारी जीवन शैली है और यह भी सही है कि हम सब हिन्दुस्तान में रहने वाले हिन्दुस्तानी हैं जैसे पाकिस्तान में रहने वाले पाकिस्तानी। कुछ सैकड़ों वर्ष पहले यानी जब से मुगल राज हिन्दुस्तान में आया तब तक भारत में सब हिन्दुस्तानी या हिन्दू थे और हिन्दुत्व उनका मूल मंत्र था। धर्मान्तरण आरम्भ हुआ और लालच में या डर से कुछ हिन्दू मुस्लमान धर्म अपनाने लगे। इन लोगों की पीढ़ी दर पीढ़ी व लगातार धर्मान्तरण से जनसंख्या बढ़ती गई। इसी तरह हिन्दुओं को ईसाई बनाने की मुहिम भी चालू हुई जिसे अब तक अनेक ईसाई मिशनरियां आगे बढ़ा रही हैं। कुछ दिनों से 'लव जेहाद' के बारे सुनने को मिल रहा है। तो पैसा, झूठ, फरेब या अन्य कोई अनुचित हथकंडे अपना कर, गरीब-पिछड़े हिन्दुओं को निशाना बनाया जा रहा है। किसी की मजबूरी को भुनाना घृणित शोषण है। देश में मुस्लमान हों या ईसाई इन सब की जड़ें तो हिन्दू और हिन्दुत्व में ही हैं। उनके बुजुर्ग तो एक समय हिन्दू ही थे-इसे झुठला या भुला नहीं सकते। किसी पेड़ की जड़ें ही सबसे महत्वपूर्ण होती हैं और बाद में तना, टहनियां, पत्ते, फल-फूल इस समय के सभी मुस्लमान, बुद्ध, जैन, ईसाई उस पेड़ की शाखाएं हैं जिसकी जड़ें हिन्दुत्व है। क्या यह सच नहीं है कि प्राय: देखा गया है कि मुस्लमान व हिन्दू भाईयों की सबकास्ट अभी तक एक ही चल रही हैं जैसे मलिक, भट्ट, राणा, राठौर (राठर) आदि। बहुत निकट से देखें तो दे श के मुस्लमानों की बहुत सी आस्थाएं, परम्पराएं और संस्कृति पीढ़ियों के बाद भी बदल नहीं पाई हैं या भुला नहीं पाए हैं। श्री अब्दुल कलाम हमारे देश के राष्ट्रपति रह चुके हैं सुना है व पढ़ा है कि उन्होंने गीता व वेदों का गहन अध्ययन किया है। शब्दकोष के अनुसार धर्म का अर्थ है सत्कर्म, पुण्य या सदाचार। धर्मज्ञ वह है जो धर्म को जानने वाला है, जो धर्म परायण यानी सदा धर्म कार्यों में यथाशक्ति अनुष्ठान करता है। निष्ठा पूर्वक कर्तव्य का निर्वाहन ही धर्म है। विभिन्न हिन्दू धार्मिक ग्रंथों के अनुसार हिन्दू धर्म एक जीवन पद्धति है जो सदाचार व पुण्य जीवन व्यतीत करने का मार्ग दर्शक है। इन ग्रंथों में उन सदकर्मों की व्याख्या है जो धर्म-कर्म के लिए आवश्यक हैं। इस महान हिन्दू राष्ट्र ने ही मानव जीवन के आधार-सनातन जीवन मूल्यों की सर्व प्रथम व्याख्या हमारे ऋषियों ने की थी और यह व्याख्या चार वेदों में उपलब्ध है। वेद का अर्थ है ज्ञान-भावार्थ चार वेद ज्ञान के भंडार हैं जिनमे सोपान व अनुकरण उत्तम जीवन पद्धति के लिए अति आवश्यक है। तो कौन ऐसा मूर्ख व्यक्ति होगा जो ज्ञान प्राप्त नहीं करना चाहेगा और क्या ज्ञान प्राप्त करने से किसी की धर्म की परिभाषा बदल जाएगी?उदाहरण के लिए अथर्ववेद जिसका अर्थ है एकाग्रता, में मानव शरीर के अंगों, शारीरिक रोगों, राज धर्म, राष्ट्र धर्म, समाज व्याख्या अध्यात्मवाद और प्रकृति का विस्तार से वर्णन है, तो ऐसा ज्ञान तो सबके लिए अनिवार्य है ताकि उत्तम जीवन यापन कर सके। बहुत से मुस्लमान व ईसाई भी इन जीवन मूल्यों का अनुकरण करते हैं। इसलिए गोआ के मंत्री ने बिल्कुल सही ही तो कहा है। हिन्दुओं के ग्रंथों में कहीं यह नहीं कहा कि सनातन को न मानने वाला हर कोई 'काफिर' (या उस जैसी संज्ञा) है यहां तो सर्वधर्म सम्भव है। श्रीमती जयललिता, तमिलनाडू की मुख्यमंत्री ने धर्मान्तरण पर कानून बनाने का प्रयत्न किया था परन्तु कुछ तत्वों ने बात आगे नहीं बढ़ने दी। इस समय की मांग है कि लालच देकर या भय पैदा कर या कोई अन्य अनुचित हथकंडे अपनाकर धर्मान्तरण बंद हो और यह तभी संभव होना चाहिए जब कोई मनुष्य दोनों धर्मों का पूरा ज्ञान रख कर विवेकपूर्ण फैसला करे। मुख्यमंत्री जयललिता की पहल व सोच से देश को सीख लेने की आवश्यकता है।❖

सेवा का सही सम्मान

केन्द्र सरकार द्वारा वन रैंक वन पेंशन (ओआरओपी) की घोषणा लाखों पूर्व सैनिकों, उनके परिजनों और युद्ध में शहीद हुए जवानों की विधवाओं के 40 साल के इंतजार और संघर्ष का नतीजा है यह निर्णय ओआरओपी को आजाद भारत में किसी सरकार द्वारा पूर्व सैनिकों के लिए सबसे बड़ा और उल्लेखनीय कल्याणकारी कदम बनाता है और इस महत्वपूर्ण वादे को पूरा करने का श्रेय निश्चित रूप से केन्द्र सरकार को जाना चाहिए। ओआरओपी पूर्व सैनिकों और शहीद सैनिकों की विधवाओं को दशकों की सेवाओं और त्याग के लिए अपने देश की तरफ से आभार प्रकट करना है। सशस्त्र सेनाओं के जवान विशेष परिस्थितियों में अपनी सेवाएं देते हैं। वे अपने परिवारों से दूर रहते हैं और काफी कम उम्र में सेवा से अवकाश प्राप्त कर लेते हैं। ओआरओपी पूर्व सैनिकों के प्रति उठाया गया बिल्कुल सही कदम है। अगर चार दशक पुराने संघर्ष के इतिहास और इस कल्याणकारी कदम को उठाने में सरकार के लिए वित्तीय निहितार्थ को हम समझ लें तो इस सरकार द्वारा ओआरओपी को लागू करने के निर्णय का महत्व समझ सकते हैं। सभी देश और उनके लोग अपने पूर्व और कार्यरत सैनिकों को प्यार, सम्मान और आदर देते हैं। इस मुद्दे पर 25 लाख पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को लेकर हमारा व्यवहार और उत्तरदायित्व निराशाजनक रहा है और उसे किसी भी तरह जायज नहीं ठहराया जा सकता। ये लोग और उनके परिजन इस यकीन के साथ देश की नि:स्वार्थ सेवा करते हैं कि जब मौका आएगा, देश उनकी देखभाल करेगा। पिछली सरकारों का ओआरओपी पर जो रवैया रहा, इस अवधि में इसे सुलझाने की न तो उन्होंने राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई, न हिम्मत। अब जब ओआरओपी का कार्यान्वयन हो रहा है तो वे जिस तरह इसका श्रेय लूटने का प्रयास कर रहे हैं वह दुखद ही नहीं, हास्यपद भी है। पूर्व सरकार ने न केवल वन रैंक वन पेंशन के मामले में लंबे समय तक उदासीनता का परिचय दिया, बल्कि 2014 के आम चुनाव के ऐन पहले हड़बड़ी में इससे संबंधित घोषणा भी कर दी। पूर्व सरकार ने तब इस योजना के लिए महज पांच सौ करोड़ रूपए का बजटीय आवंटन किया। चुनाव के ठीक पहले राजनीतिक लाभ के लिए किए गए इस फैसले का खोखलापन इस तथ्य से ही जाहिर होता है कि वन रैंक वन पेंशन की योजना पर अमल के लिए केंद्र सरकार को साढ़े आठ हजार करोड़ से लेकर दस हजार करोड़ रूपए तक खर्च करने होंगे। वर्तमान केन्द्र सरकार ने जिन परिस्थितियों में यह फैसला लिया वह सराहना के काबिल है। भारतीय अर्थव्यवस्था में यद्यपि सुधार हो रहा है, लेकिन यह अभी भी संतोषजनक नहीं कही जा सकती, क्योंकि अस्थिरता का भाव अभी समाप्त नहीं हुआ है। यह उल्लेखनीय है कि इस आर्थिक परिदृश्य में भी वर्तमान केन्द्र सरकार ने महज 16 माह में ही एक ऐसा फैसला कर लिया जिसका व्यापक आर्थिक वित्तीय असर होगा। वन रैंक वन पेंशन ने राष्ट्र सेवा और देश प्रेम के प्रति सरकार और समस्त देश की प्रतिबद्धता का ही संदेश दिया है। जब हम एक मजबूत-सशक्त और सुरक्षित भारत के निर्माण के लिए प्राण-पण से जुटे हुए हैं तब इन गुणों से कभी समझौता नहीं किया जा सकता। जो लोग सशस्त्र सेनाओं का हिस्सा बनकर देश की सेवा कर रहे हैं उन्हें यह संदेश दिया गया है कि देश और उसके लोग हमेशा उनके और उनके परिवार के पीछे खड़े हैं।❖

सभी देश और उनके लोग अपने पूर्व और कार्यरत सैनिकों को प्यार, सम्मान और आदर देते हैं। इस मुद्दे पर 25 लाख पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को लेकर हमारा व्यवहार और उत्तरदायित्व निराशाजनक रहा है और उसे किसी भी तरह जायज नहीं ठहराया जा सकता। ये लोग और उनके परिजन इस यकीन के साथ देश की नि:स्वार्थ सेवा करते हैं कि जब मौका आएगा, देश उनकी देखभाल करेगा। पिछली दो संप्रग सरकारों के वरिष्ठ नेताओं का ओआरओपी पर जो रवैया रहा, इस अवधि में इसे सुलझाने की न तो उन्होंने राजनीतिक इच्छाशक्ति दिखाई, न हिम्मत।

साभार: दैनिक जागरण

वाल्मीकि रामायण में आश्रम व्यवस्था

डॉ. सतीश कुमार शर्मा

मनुष्य सर्वदा पुरूषार्थ चतुष्ट्य (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) की सिद्धि के लिए प्रयास में लगा रहता है। इसके लिए आश्रम-धर्म को अपनाया जाता रहा है। आश्रम शब्द का अर्थ अमरकोश के टीकाकार मनुश्री दीक्षित ने इस प्रकार कहा है-

आश्रम्यन्त्यत्र अनेन वा श्रमु तपसि घञ्
यद्वा आसमंताच्छ्मोऽत्र स्वधर्मसाधनक्लेशात्।।

जिसमें सम्यक् रीति से श्रम किया जाए वह आश्रम है। जिसमें कर्तव्य पालन हेतु पूर्ण श्रम किया जाए वह आश्रम है। आश्रम शब्द आङ् उपसर्ग पूर्वक श्रमु(तपसि) धातु से घञ् प्रत्यय होकर बना है।

वाल्मीकि ने रामायण में चार आश्रमों के प्रति अपनी आस्था दर्शायी है। ये चार आश्रम है ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा सन्यास। वाल्मीकि गृहस्थ आश्रम को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान करते हैं।

ब्रह्मचर्य- सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम का स्थान है। शतपथ-ब्राह्मण में ब्रह्मचारी का कर्तव्य बताया गया है। ब्रह्मचारी समिधा लाकर प्रातः सांय अग्निहोत्र करे। वह गुरू के ऊँचे आसन पर न सोए। वह नृत्य, गीत, व्यर्थ भ्रमण से दूर रहे। महाराज दशरथ का पुत्रोष्टि-यज्ञ करवाने वाले ऋषि शृंग इस प्रकार के ही हैं। वे वनवासी तपस्वी तथा स्वाध्यायी है। राजा रोमपाद अंग देश के राजा थे। वहां ऋषि शृंग को लाने पर अकाल समाप्त हुआ तथा वर्षा हुई। अयोध्या काण्ड में राम को विद्याव्रत का पूर्ण स्नातक बताकर उनकी ब्रह्मचर्य परायणता का परिचय दिया गया है। अस्त्र-शस्त्र विद्या में वे अपने पिता दशरथ से भी बढ़कर थे। रावण ने भी ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्या व व्रत की साधना की थी। वाल्मीकि ने लव तथा कुश को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कराकर सांगोपांग वेदाध्ययन कराया तथा लोगों के सामने रामायण को लाया। कवि ने विश्वामित्र, भारद्वाज आदि ऋषियों के ब्रह्मचर्य साधना केंद्रों का परिचय दिया है।

गृहस्थ- गृहस्थ आश्रम सभी आश्रमों में महत्वपूर्ण है। इस आश्रम में मनुष्य विवाह कर सन्तान पाकर जीवन में पूर्णता प्राप्त करता है। इस आश्रम में मनुष्य देवऋण, पितृऋण तथा मातृऋण से मुक्ति पा सकता है। भरत राम से जब अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं। वे कहते हैं- 'चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम सर्वश्रेष्ठ है। हे राम! आप, इस आश्रम को क्यों त्यागना चाहते हैं।' इक्ष्वाकु वंश के सभी राजा गृहस्थाश्रम के आदर्श हैं। गृहस्थ आश्रम में धर्म-अर्थ व काम का पूर्ण बोध होना चाहिए। राम इनसे भलीभान्ति परिचित थे। वे सामाजिक कार्यों में भी निपुण थे। परिवार पोषण से लेकर दण्ड के प्रयोग का उन्हें विलक्षण ज्ञान था। उनके राज्य में कोई विधवा स्त्री नहीं होती थी। कोई अल्पमृत्यु नहीं थी लोगों के पास पर्याप्त धन था। प्रजा सभी प्रकार से सुखी थी।

वानप्रस्थ- इस आश्रम में पुरूष पत्नी सहित स्वाध्याय, तप तथा संयम में रहकर आत्मतत्व बोध के लिए अनवरत प्रयास करते थे। शिक्षा के दायित्व का संचालन करते थे। शिक्षा के दायित्व का संचालन करने वाले तपस्वी इसी आश्रम में समाज का मार्ग दर्शन करते थे। राम ने जब गुह से निवेदन किया तक वानप्रस्थ धर्म को स्वीकार किया था। उन्होंने तपस्वी धर्म को धारण कर भूशयन, जटाधारणादि को स्वीकार किया था। अगस्त्य मुनि के आश्रम में पहुंचने पर उन्होंने वानप्रस्थ विधि से ही राम का सत्कार किया था।

संन्यास- आदि कवि ने परिव्राजक और भिक्षुक के रूप में सन्यास आश्रम की महत्ता को बतलाया है। रावण ने सीता के अपहरण के लिए सन्यासी का वेश धारण किया था। हनुमान का भिक्षुक रूप में राम लक्ष्मण से मिलते समय उल्लेखनीय है। दशरथ के यज्ञ में तपस्वी और श्रमण भोजन करते दिखाई देते हैं। वसिष्ठ, विश्वमित्र, अगस्त्य तथा वाल्मीकि आश्रम सन्यास आश्रम के ही रूप हैं।

जीवन को सार्थक बनाने के लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चार पुरूषार्थ बताए गए हैं। प्रथम तीन पुरूषार्थ साधन रूप में तथा चतुर्थ मोक्ष साध्य रूप में व्यवस्थित हैं। मोक्ष जीवन का अन्तिम लक्ष्य है। मुन ष्य ब्रह्मचर्य आश्रम में बलि ष्ठ शरीर, विद्या अर्जन, श्रद्धाशील व विनयादि गुणों को अर्जित करता है। गृहस्थ में धर्मपूर्वक अर्थ व काम का अर्जन करता है। इसके बाद वीतरागी होकर शांत जीवन व्यतीत करता हुआ वानप्रस्थी हो जाता है। सन्यास में संसार के सभी बंधनों को त्यागकर मोक्ष मार्ग को ढूंढना है। ❖

पृष्ठ 9 का शेष....

महामिलन का मेला-मुहल्ला

दशहरा का छठा दिन मुहल्ला कहलाता है। इस दिन देवताओं का महामिलन होता है और सम्भवत: इस दिन का नाम मुहल्ला पड़ा है। मुहल्ले को सभी देवता रघुनाथ के शिविर में पहुंचते हैं। सांय अढ़ाई-तीन बजे रघुनाथ शिविर के बाहर देवताओं का समागम देखते ही बनता है। कोई देवता शिविर के भीतर जाकर शीश नवा रहा होता है तो कोई शीश नवा कर बाहर आ रहा होता है। बाहर कुछ देवता एक-दूसरे से मिल रहे होते हैं तो कुछ हर्षोल्लास से उछलते-कूदते देखे जा सकते हैं। इस दिन रात को 9-10 बजे रघुनाथ मंदिर में देवी रूप का विशेष आयोजन होता है। देवी रूप में एक व्यक्ति को रंगीन वस्त्रों तथा आभूषणों से सजा कर उसके सिर पर मुकुट लगाया जाता है। एक दूसरा व्यक्ति शेर का मुखौटा और मृगछाला पहनकर देवी का वाहन बनता है। मुकुटधारी व्यक्ति इस शेर बने व्यक्ति पर सवारी करता है। इस सिंह-सवारी की झांकी को देवी रूप कहते हैं। उस समय चन्दरौलियां (चन्द्रावली नामक श्रीकृष्ण की गोपियां) और कान्ह (कृष्ण) का नृत्य होता है। देवी रूप की पूजा की जाती है। देवी उल्लास मुद्रा में शिविर के प्रागंण में चन्दरौली और कान्ह के बीच एक-दो चक्कर लगाती है। उस समय का दृश्य बड़ा मनभावन होता है। यह देवी रूप लीला भगवान् राम की शक्ति उपासना एवं आस्था को दर्शाती है।

लंका दहन

दशहरा का सातवां और अंतिम दिन लंका दहन की परम्परा से जुड़ा है। इस दिन दोपहर के समय कला केन्द्र मंच के सामने की दीवार के प्रवेश द्वार के पास लगाए गए शामियाने में राजा आकर बैठता है। उनके आगे देवता और लोगों का साथ-साथ नाच होता है।

लंका-दहन के रूप में जो झाड़-झंखाड़ जलाया जाता है उसके बीच रावण, कुम्भकरण और मेघनाद के मुखौटे तीर से बींधने की औपचारिकता करके जलती आग में डाले जाते हैं। रघुनाथ शिविर से रथ यात्रा के बाद पालकी में लायी सीता माता की मूर्ति को रघुनाथ की मूर्ति के साथ रखा जाता है। इससे यह समझा जाता है कि रावण को मारने के बाद सीता माता का राम से मिलन हो गया है ओर अब वे साथ वापिस लौटते हैं। इस भावना से मैदान के अन्तिम छोर से रथ को मोड़ कर वापसी यात्रा गगनभेदी हर्षनाद के साथ आगे बढ़ती है। उत्तर-पश्चिम में दूसरे किनारे पर पहुंच कर रथ रूकता है। यह रथ अगले दशहरे तक यहीं रहता है। रथ के यहां पहुंचने के बाद रघुनाथ की शोभा यात्रा सुल्तानपुर रघुनाथ मंदिर की ओर चलती है। कुछ देवता भी इसमें साथ होते हैं। अधिकांश देवता दशहरा मैदान से ही अपने-अपने मंदिरों की ओर लौटतें हैं। यह समय बड़ा भावुकतापूर्ण होता है।

मेले का व्यापारिक पक्ष

कुल्लू दशहरा अपनी विशिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के कारण सर्वप्रतिष्ठित है, इसमें कोई संशय नहीं। इस मेले की इन्द्रधनुषी रंगीनियों में मनोरंजन के सभी खेल तमाशे सुलभ होते हैं जिनका प्रचलन प्राय: सभी बड़े मेलों में पाया जाता है। यदि व्यापारिक दृष्टि से देखें तो सभी मेलों में न्यूनाधिक व्यापार-कारोबार भी चलता ही है। परन्तु, कुल्लू दशहरा का व्यापारिक पक्ष ऐतिहासिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अतएव यहां इस पक्ष पर अलग से किंचित् प्रकाश डाला जाना अपेक्षित है। कुल्लू राज्य राजा मान सिंह (1688-1719 ई.) के शासनकाल में एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभर कर सामने आया। उस समय इस राज्य का आधिपत्य शिमला के कोटगढ़, कुमारसेन, बलसन तक फैल गया था। भंगाहल और लाहौल-स्पिति भी कुल्लू राज्य के अधीन आ गये थे। राजा मानसिंह ने अपने विशाल राज्य की स्थापना कर कुल्लू दशहरा को अन्तर्राष्ट्रीय मण्डी के रूप में बढ़ावा दिया। तब यारकन्द, समरकन्द, चीन एवं तिब्बत के व्यापारी दशहरा में आने लगे। इन व्यापारियों द्वारा घोड़े-खच्चर और व्यांग (पशम) तथा पशम से बनी वस्तुएं विक्रय के लिए लायी जाती थीं। इनमें पशम का व्यापार वृहत् स्तर पर होता था। दूसरी और निचले मैदानी क्षेत्रों के व्यापारी अभी भी पूरे उत्साह से दशहरा मेले में आ पहुंचते हैं। पशम व्यापार के विकल्प के रूप में भी आज यहां ऊनी वस्त्रों में कुल्लू शॉल, टोपी, मफलर एवं पट्टुओं के व्यापार ने बल पकड़ लिया है। लाहौल-स्पिति और विस्थापित तिब्बती समुदाय के लोग विविध डिजाइनों की हाथ से बुनी स्वेटर और जुराबों का व्यापार करते हैं। हस्तशिल्प में सिराज क्षेत्र की पूलें (पैरों में पहनी जाने वाली भांग के रेशे से बनी जूतियां) भी बाहर से आए लोगों के लिए दशहरा मेले एवं कुल्लू घाटी की यादगारी वस्तुओं में एक चाहत बन गई है। मेले में कृषि और बागवानी के लोहे के औजारों, तथा अन्य सामानों की अनेकों दुकानें लगती हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की व्यापारिक गतिविधियों के बीच दशहरा में कांसा-पीतल के व्यापार का एक विशेष महत्व है। कांसा-पीतल के बर्तनों की यहां एक बड़ी मण्डी लगती है। ❖

नचिकेता की श्रद्धा

पिछले कुछ वर्षों का अवलोकन करते हैं तो देखते हैं कि मंदिर आने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उसमें काफी युवाओं की बढ़ी संख्या है। साथ में हम सामाजिक समस्याओं में भी बढ़ोतरी देख रहे हैं। ये दोनों ही स्थितियां विपरित हैं। अगर श्रद्धा बढ़ रही है तो सामाजिक समस्या क्यों बढ़ती दिखाई दे रही है और जिसको हम श्रद्धा समझ रहें हैं वह सही में श्रद्धा है या आत्म संतुष्टि का एक माध्यम है। इसका जवाब हमें स्वामी विवेकानंद देते हैं। 'जिसको स्वयं पर विश्वास नहीं, वही नास्तिक है।' स्वामी विवेकानंद को नचिकेता का पात्र बहुत पसंद था। जिन लोगों ने समस्त उपनिषदों में अति सुंदर कठोपनिषद् का अध्ययन किया होगा, उन्हें स्मरण होगा कि किस प्रकार उस राजा ने एक विशाल यज्ञ अनु ष्ठान किया था, किन्तु दक्षिणा में छांट-छांटकर वह ऐसी बूढ़ी गायों एवं घोड़ों को दे रहे थे जो किसी काम के नहीं थे। कथा के अनुसार उसके पुत्र नचिकेता को पिता का वह कृत्य नहीं जंचा तो उसने पिता से पूछा आप इनमें से मुझे किसे देंगे?बार-बार ऐसा पूछने पर पिता ने झुंझलाकर उत्तर दिया मैंने तुझे यम को दिया। उसी समय श्रद्धा ने पुत्र नचिकेता के अन्त: करण में प्रवेश किया अब हम देखते हैं कि श्रद्धा ने किस प्रकार कार्य किया, क्योंकि यह घटना होने के बाद तुरंत ही नचिकेता सोचता है कि:

बहूनामेमि प्रथमो बहुनामेमि मध्यम:।
कि स्विद् यमस्य कर्तव्यं यन्मयाद्य करिष्यति॥

यहां से नचिकेता की यात्रा शुरू होती है इस श्लोक का अर्थ है कि 'मैं अनेकों से श्रेष्ठ हूं, घोड़े मुझसे भी श्रेष्ठ हैं, किन्तु मैं किसी भी प्रकार सबसे हीन नहीं हूं। अत: मैं कुछ न कुछ कर सकता हूं। उसका यह आत्मविश्वास धीरे-धीरे बढ़ता गया और जो समस्या उसके मन में थी, उस बालक ने उसे हल करना चाहा। इस श्रद्धा को हम और विस्तृत करके देखें तो

इसमें हम को चार महत्वपूर्ण बातें दिखाई पड़ती हैं।

(1) **आत्मविश्वास**- जो गलत है उसे गलत बोलना अर्थात् जो सत्य है उस पर विश्वास करना। सत्य के ऊपर कुछ नहीं सत्य में आस्था रखने से, सत्य मार्ग पर चलने से आत्मविश्वास आता है।

(2) **सकारात्मक दृष्टिकोण**- पिता ने यहां तक कह दिया कि 'जा मैं तुझे यम को दान में देता हूं।' तो कहीं पर भी नचिकेता के मन में पिता के प्रति कड़वाहट नहीं है ना ही द्वेष है। उसने ऐसा भी नहीं सोचा कि मेरे पिता ने मुझे ऐसा कैसे बोल दिया उसकी सोच में सिर्फ समस्या का समाधान ढूंढना है।

(3) **गलत-सही का विवेक**- गलत को पहचानना पिता यज्ञ में भ्रष्टाचार कर रहे हैं यह नचिकेता ने देखा सिर्फ देखने से वह नहीं रूका। पिता की भावना को ठेस ना लगे यह बात सोच कर उसने यह प्रश्न किया कि वह नचिकेता को किसे दान में देंगे।

(4) **प्रतिक्रिया के स्थान पर मौलिक चिन्तन एवं कार्य**- पिता ने उसको मृत्यु को दे दिया वहां पर भी वह सोचता है कि मुझे इस माध्यम से कुछ कार्य करना होगा इसलिए मेरे पिता ने मुझे मृत्यु को दिया।

अपने प्रश्नों के साथ नचिकेता यम के पास पहुंच जाता है। उसको लगता है कि उसकी सारी समस्या का समाधान मृत्यु के पास है। यम के द्वार पर वह तीन दिन तीन रात प्रतीक्षा करता है। इसके बाद नचिकेता और यम का सुंदर संवाद शुरू होता है। यह संवाद हमको वेदांतिक विचार के उच्च स्तर का परिचय करवाता है।❖

पहेलियाँ

1. जब भी लिखना होता तुमको, बनती हूं मैं सखी-सहेली।
   यही है मेरा गुण रे भाई, जब भी काटो, नई-नवेली।
2. दुश्मन का आना बुरा, जाना भला जनाब।
   लेकिन क्या है, जिसका आना-जाना दोनों खराब।
3. अगर नाक पर चढ़ जाऊं, कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊं।
4. काला घोड़ा, सफेद सवारी, एक उतरा, तो दूसरे की बारी।
5. धूप देख मैं आ जाऊं, छांव देखकर शर्माऊं।
   जब भी आए हवा का झोंका, साथ उसी के उड़ जाऊं।
6. एक राजा की अनूठी रानी, दुम के सहारे पीती पानी
7. दो-दो हैं सुंदर बच्चे, दोनों का है एक ही रंग।
   अगर एक भी बिछड़ गया, दूजा काम न आएगा।
8. जब तक रहती हूं मैं सीधी, सबको खूब पिलाती पानी।
   अगर मुझे तुम उल्टा कर दो, मैं गरीब हो जाऊंगी।

प्रश्नोत्तरी

1. वर्तमान में भारत के सबसे धनी व्यक्ति कौन है?
2. जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व क्या है?
3. पूंजी निवेश के लिए वर्तमान में सबसे उपयुक्त राज्यों में हिमाचल प्रदेश का कौन सा स्थान है?
4. भारत की दूसरी सबसे पुरानी नगरपालिका का दर्जा किसे प्राप्त है ?
5. नई दिल्ली के किस मार्ग का नाम बदलना हाल ही में बहुत चर्चित रहा?
6. गिनीज बुक में नाम अंकित करने वाले अब तक के सबसे अधिक आयु (105 वर्ष)के धावक का क्या नाम है?
7. 1 जनवरी सन् 2016 से केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के लिए कौन सा वेतन आयोग लागू होगा?
8. वर्तमान केन्द्र सरकार में केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्यमंत्री का पदभार किसके पास है?
9. मजदूरों के कार्यक्षेत्र में कार्य करने वाला भारत का सबसे बड़ा मजदूर संगठन कौन सा है?
10. आगामी मास में भारत में किस राज्य में विधान सभा चुनाव होने वाले हैं?